पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज के द्वारा जो प्रभु विनय को गाया गया है उसे संकलित किया गया है, यह प्रभु विनय का पाठन करने से दिव्य संस्कारों की प्रस्थापना होगी।

हे प्रभु! मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। क्योंकि संसार में सर्वत्र जितने भी आनन्द है, वह आनन्द, सब आनन्द उस प्रभु की गोद में प्रभु के आनन्द में समाहित हो जाते हैं। जैसे बाल्यकाल में बाल्य क्षुधा से पीड़ित हो रहा है। परन्तु माता उसे अपनी लोरियों से आनन्दित करा देती है। परन्तु एक वह आनन्द है, जो परमपिता परमात्मा का आनन्दमयी है। जो परमपिता परमात्मा के आनन्द में रमण करना चाहता है वो सर्वत्र, जितने भी आनन्द है, वे सर्वत्र क्षुद्र हो जाते है। वह कोई आनन्द नहीं है, प्रभु का आनन्द उसे हमारे यहाँ मोक्ष कहते हैं। आनन्दमयी पगडण्डी कहते है। जिसको ग्रहण करने से मानव आनन्दित हो जाता है।

यह पवित्र वेला जो गायत्री है इसके प्रभात से अपनी आत्मा को पवित्र बनाना चाहते हैं, प्रभु! करुणा कीजिए, दया कीजिए, हमारे नेत्रों में वह अमूल्य सत्ता दीजिए, हे आनन्द में रमण कराने वाले देव! आपको बारम्बार नमस्कार है।

हे कल्याणकारी इन्द्र! तू आ, और हमारा कल्याण कर। हे इन्द्र! तू हमारे जीवन का संचालक है। अपने जीवन को ऊँचा चाहते हैं। हमारा कल्याण कर।

हे भगवन! आप तो हमारे दाता है, आप हमारी माता है। भगवन! हमारी दो प्रकार की माता होती है। एक जननी माता जो भौतिक माता होती है, और एक माता आप हैं। हे भगवन! जब हम इस लौकिक माता को त्याग देते है और आपको माता बना लेते है, तो आप हमारी दूसरी माता बन जाते हैं, उस समय भगवन! हम प्रयत्न करते है तो एक काल ऐसा आता है जब माता की गोद सदृश आपकी गोद में पहुंच कर हम वह आनन्द प्राप्त करते हैं कि जैसे हमने सर्व ब्रह्माण्ड को विजय कर लिया हो।

हे माता! तू वसुन्धरा है। और तेरे में ही, हम वशीभूत रहते हैं। तेरे में ही बसते रहते हैं तू अपने में बसाने वाली है। जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसके आनन्दमयी परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव

गुणगान गाते रहते हैं।
हे विष्णु! आप मधु हैं। आपका बनाया हुआ संसार भी मधु है, रहे हम प्राणी, जो जीव भाव बने बैठे हैं, हमारे हृदयों में नाना त्रुटियां हैं, नाना चिन्ताएं हैं। हे विधाता! आप तो विष्णु हैं, शेषनाग पर शयन करने वाले हैं। हे भगवन! हमारा वह कौन सा काल आयेगा। जब हम भी शेषनाग की शैय्या पर शयन करने वाले बनेंगे। हम मानव तो अवश्य हैं परन्तु इतने अभागे नहीं, यदि अभागे होते तो आपके नियम के अनुकूल हमें यह मानव योनि ही प्राप्त न होती।
भगवन! हमारा हृदय तो चाहता है कि हम शान्तिदायक बन जायें, शेषनाग पर स्थित हो जायें, इससे भी ऊँचा स्थान हो जाये, परन्तु क्या करें, यह स्थिति तो उसी काल में आयेगी जब विधाता! आपके बनाये हुए सर्वज्ञ पदार्थ, ये पंच भौतिक तन्मात्राएं हमारे शरीर में शान्तिदायक बन करके कार्य करेंगी, परन्तु क्या करें इतने महान दुर्भागी बने बैठे हैं। विधाता! इसमें आपका तो कोई दोष नहीं, हमारे कर्मों का ही दोष है जो आपके आँगन में नहीं आ रहे हैं। अभागे इसलिए हैं कि आपके नियन्त्रण में कार्य नहीं करते। हे विधाता! जब तक आपकी करूणा न होगी, दया न होगी तब तक हम कदापि भी आपके आँगन में न आ सकेंगे। हे विधाता! हमारे हृदय में शान्ति उत्पन्न करो, आज हम नास्तिक बनते जा रहे हैं, हे विधाता! हमें नास्तिक से आस्तिक बनाओ।
हे परमात्मा! हे विधाता! इच्छा तो ऐसी होती है कि आपके अङ्ग में पहुँचकर अपने शरीर को ऐसा बना दे कि आपके आश्वासनों में आकर मनोहर बन जाएं। हे देव! हे सखे! हे मित्र! हम आपकी याचना कर रहे हैं। सृष्टि के आरम्भ में, आपने हमारे लिए स्थावर सृष्टि की स्थापना की। इसके पश्चात सृष्टि पर हमारे व्यवहार के लिए नाना प्रकार की वनस्पतियाँ, प्राकृतिक आहार, फल, पुष्प आदि उत्पन्न किए। इन सबका सदुपयोग करके हमारा जीवन महत्वपूर्ण, एक अलौकिक बन जाता है। इसलिए हे देव! हम आपसे प्रार्थना कर रहे हैं।
हे देव! हे सखा! हे मित्र! तू इस संसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शान्तिदायक, महान और ऊँचा बना। विधाता! यही नहीं, हम संसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व यह चाहते हैं कि जो हमारा हृदयरूपी

राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहे, जिस रामराज्य के ऊपर संसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता! आज हम शरीर में वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाये। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँची बन जाये और वह विधाता, इस नगरी में ओत प्रोत हो जाये। वह विधाता, इस राष्ट्र का स्वामी बन जाये।

हे विधाता! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो, जो राष्ट्र हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनायेंगे, विधाता? जब तक आपकी करूणा नहीं होगी, विधाता! आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक हम इस संसार का, अपने शरीर रूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते, न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, संसार का कल्याण चाहते हैं। जब संसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय, अयोध्या के तुल्य बन जाएगा। रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाएगा। उस काल में शान्ति का प्रदर्शन हो जाएगा।

विधाता! आज हम भी अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम भी अशान्ति में हैं। हमें शान्ति नहीं मिल रही हैं।

हे विधाता! वह समय किस काल में आएगा, जब वेद मन्त्रों का पाठ, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के कण्ठ में होगा, जब माता गायत्री का महान स्वरों में गायन गाया जाएगा। आज हम समय का परिवर्तन चाहते हैं। हे देव! हमारे समक्ष उस समय को प्रकट करो, जहाँ गम्भीर व्यक्ति हो, जहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक वस्तु को विचारने वाला हो। हे विधाता! हमें उस समाज की आवश्यकता नहीं, जहाँ अभिमान हो, तथा अपने से बड़ा किसी को न मान रहा हो। हे विधाता! जब ऐसे ऐसे अभिमानी संसार में उत्पन्न हो जाएंगे तो उनका अभिमान आपके अन्तरिक्ष में रमण करेगा। यह प्रतीत नहीं कि वह अभिमान किस किस मानव को नष्ट भ्रष्ट कर देगा। हे विधाता! हमें तो वे व्यक्ति चाहिए, जो निरभिमानी हो, विद्या से परिपक्व हों अर्थात जिनके पास अनन्त विद्या हो। हे देव! हे मित्र! हे सखा! हम आपकी शरण में आए हैं। हमें उस महत्व को प्रदान करो, जिससे हम महान बनें, विचित्र बनें, यौगिक बनें।

हे परमात्मन! हे महान! तू हमारा वास्तव में कल्याण कर। हमे उस कल्याण के मार्ग पर ले चल, जहां हमारे जीवन का सम्बन्ध, मानो प्राणी मात्र से होता चला जाए और हम अपने जीवन को व्यापकवाद में ले जाते चले जाएं। हम उस प्रभु! इच्छा क्या करते हैं? हे प्रभु! हमे आनन्द करा। हमे आनन्दमय ज्ञान की प्राप्ति करा जिससे भगवन! हम संसार में जिज्ञासु बने और जिज्ञासु बनते हुए हम इस आत्मा का दिग्दर्शन करते चले जाएं।

हे प्रभो! तू कल्याण करने वाला है। तू संसार को उज्ज्वल बनाता है, तेरी महत्ता इस संसार में ओत प्रोत है। जहाँ हमारे नेत्र जाते हैं, वहाँ आपका ज्ञान विज्ञान इतना अनुपम और विलक्षण है, कि जिसे ऋषि तो बहुत कुछ जान भी सकते हैं, परन्तु मानव तो हृदय से उच्चारण करता करता संसार से चला जाता हैं।

हे परमात्मन! आपने इस संसार को रचाया है, इसका कल्याण करो, हम तेरी शरण में आए हैं, तेरी महत्ता चाहते हैं। इस महत्ता को प्राप्त करके, जब संसार में विचरण करते हैं तो हमारा कल्याण हो जाता है। जब आत्मा इस शरीर को त्याग कर अन्तरिक्ष में रमण करता है, तो आपके नियम के अनुकूल वह उस स्थान पर पहुँच जाता है, जहाँ इसका भोग होता है।

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है। तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जायें और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे।

हे परमात्मन! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेगें। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक कल्याण हो। वह कौन सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी संध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब संध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह संध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती हैं। जब देवता संध्या

के द्वार पर जाते हैं तो संध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराये जाओगे।
अतः संध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।
हे विधाता! हमारी रक्षा करो। आज हम अपनी रक्षा चाहते हैं यह जीवन आपका है, यह शरीर आपका है, यह संसार आपका है। जब मनुष्य सब कुछ परमात्मा को अर्पण कर देता है। तो उस समय मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ हो जाता है। आत्मा के द्वारा जो मलविक्षेप आवरण हमारे पाप कर्मों द्वारा, दुष्ट कर्मों द्वारा आ जाते हैं वह उस प्रकाश से सब शांत हो जाते हैं। हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। तू हमारा ही नहीं संसार का कल्याण करने वाला है। आज संसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दें जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्रोत दिया, उस आनन्द के स्रोत को आज भी दे। किसको दे? महान पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना, जिससे हम संसार में उज्ज्वल बनें विधाता! जब आपकी कृपा होगी तो हम आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आये। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जायेंगे, तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।
हे प्रभु! हम कैसे अभागे हैं, संसार में। मैं तो भगवन! वह कर्म करना चाहता हूँ जिस कर्म को करके प्रभु! मैं तुम्हारी गोद में आ जाऊं। भगवन! मैंने आज से पूर्व काल में जो पाप किया है उसे क्षमा करो। आज मैं क्षमा चाहता हूँ। प्रभु! तू आज मुझे अपना और अपनाकर अपनी गोद में ले।
हे भगवन! तू यज्ञ को देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है, भगवन! वह प्रेरणा दो, जिससे हम अपना और इस संसार का कल्याण कर सकें। जब विधाता की दया

होती है तो हमारी आन्तरिक भावना उज्ज्वल और पवित्र हो जाती है।

हे प्रभु! मेरे में वह महानता और सत्ता दो, कि मैं इस यज्ञ वेदी को, यहाँ भी अपनाता जाऊं और सूर्य लोक में जाऊं तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर, संसार को ऊँचा बनाता चला जाऊं। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो। यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुव मण्डल तक जाऊं तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। हे प्रभु! मेरा जीवन यज्ञमय हो। हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो, जिससे विधाता! हम संसार रूपी महान वेदी की रक्षा कर सकें, जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं। हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं। हे विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का, आज मेरे द्वारा न आये, वह खरदूषण मेरे द्वारा न आयें। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके हमारी रक्षा करें। आज हमें इस भगवान राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा होती है। दैत्यों को शान्त किया जाता हैं। हे देव! तू कैसा अनुपम है। हे देव! तू कैसा वैज्ञानिक है। हे देव! तू कितना महान है। हे देव! तू कितना विशाल है जो मानव तपस्या करते करते तेरी प्रतिभा को जानने में असमर्थ हो जाते है। तू ऐसा महान है।

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। आज तू हमे क्यों प्रेरित नहीं कर रहा है। हम भी तो तेरी सृष्टि में आये हैं। यह संसार भी तो आपका बनाया हुआ है। भगवन! आपने इन दुराचार और इन पाप कर्मो को क्यों रचाया? आज प्रभु! इनको न रचाते तो हम संसार में पापी न बनते। प्रभु आज हम पापी हैं। हमें अपने कंठ से लगा। आज हमें प्रेरणा देकर उन पाप भावनाओं को समाप्त करा। प्रभु! हम ज्ञानाग्नि में इन्हें भस्म करना चाहते हैं। विधाता! हम तेरी शरण के लिए महानता चाहते हैं। प्रभु! तेरी सहायता चाहते हैं। हमें वह सहायता दे, जिससे हम ब्रह्म के समीप जायें, हम यज्ञशाला में जाये। अग्नि प्रज्वलित करें और देवताओं को हवि दें। देवता उसे पाकर प्रेरणा देंगे जिन प्रेरणाओं को पाकर, प्रभु! हम तेरी गोद में आ जायेंगे। हे कल्याणकारी प्रभु! आप कहाँ है? आज हमारे कल्याण के लिए योजना बना। हम तेरी संसार रूपी यज्ञ वेदी पर आये हैं। हमें प्रेरणा दें। हमें महान बना। हम वास्तविक ब्रह्मा बनें, योगी बनें। हे विधाता! आज हम अपना ही

कल्याण नहीं चाहते हम संसार का भी कल्याण चाहते हैं।
हे प्रभु! मैं आपको अपनाना चाहता हूँ। प्रभु! जब आपने प्रेरणा नही दी, तो मैं पाप ही पाप करता, शुभ कर्म कहाँ करता? प्रभु! आज मैं आप की प्रेरणा का इच्छूक हूँ। मुझे अपनी प्रेरणा दो, तू ही मुझे महान बना सकता है, प्रभु! संसार में ओर कोई नही। जो मुझे महान बना सके।
हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। तूने ऋषि मुनियों का कल्याण किया है। विधाता! तू हमारा भी कल्याण कर। तू हमें भी यहाँ से ले चल, जहाँ एक दूसरे की त्रुटि हो, एक दूसरे पर क्रोध न्यौछावर किया जाता हो, यह संसार मुझे नही चाहिये। मुझे तो वह कजली वन चाहिये, जिस कजली वन में सिंह दहाड़ते हो। जहाँ हाथी ध्वनियां कर रहे हों। जहाँ विधाता! नाना सिंह ध्वनियां करते करते उस अमूल्य आत्मा के द्वारा, वेदों का श्रवण करने वाले हों। आज के मानव से ये सिंह ऊँचे हैं जो ऋषि मुनियों की वार्ता को पान करते हैं।
हे प्रभु! मेरा अंग प्रत्यंग सर्वत्र इन्द्रियां यज्ञमय हों। मेरे जीवन का एक एक संकल्प यज्ञमय हो। आज मैं विकल्पों में नहीं जाना चाहता, जो जीवन को नष्ट कर दें। परन्तु प्रभु! मुझे अपने संकल्पों को यज्ञमय बनाने के लिए सहायता की आवश्यकता है। जैसे यज्ञशाला को रचाने के लिये यज्ञमान की आवश्यकता है। जैसे यज्ञशाला को रचाने के लिये यज्ञमान को ब्रह्मा की सहायता की आवश्यकता है। इसी प्रकार आज अपने जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए किसी की सहायता लेना चाहता हूँ। परन्तु मुझे कोई ऐसा प्रतीत नहीं देता जिसकी मैं सहायता लूं, मुझे तो केवल प्रभु ही ऐसा प्रतीत देता है जिसका यह संसार यज्ञ है। मैं उस परमपिता परमात्मा को अपना स्वामी बनाना चाहता हूँ। मैं किंचित बुद्धि वाला एक यज्ञमान बनना चाहता हूँ।
प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। संसार का कल्याण करता है। मैं तो तब ही जानूँगा जब मुझ जैसे का भी संसार से पार करोगे। मैं उसी काल में जानूंगा कि तेरी सत्ता इस संसार में है। मैंने सुना है कि तूने अगस्त्य मुनि जैसे का कल्याण किया है, नारद मुनि जैसे को तुमने पार किया है मैं तो तब ही जानूंगा जब मुझे भी इस संसार से पार करोगे। मेरा जीवन यज्ञमय होगा। मेरी प्रत्येक इन्द्रियां

यज्ञमय हों। मेरे नेत्र संसार में, जो भी देखें वह यज्ञ हो। वह यज्ञ परोपकार का हो, राष्ट्र कल्याण का हो, भौतिक हो या आध्यात्मिक यज्ञ हो, मेरे नेत्र उस कुवस्तु को न देख सकें, जो यज्ञ से पृथक हो। कल्याण करने वाले स्वामी! तू आ और हमारा कल्याण कर। हे प्रभु! मैंने सुना है तुमने अगस्त्य मुनि को संसार से पार किया है। प्रभु! मैं किंचित बुद्धि वाला एक महा त्रुटियों वाला, तेरी शरण में आना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि मेरा यह जीवन यज्ञमय हो। जो मेरा द्रव्य हो, वह भी यज्ञमय हो। मेरे शरीर का एक एक कण, यज्ञ में प्रेरित हो। मैं एक सूक्ष्म से बन्धन में रहने वाला हूँ प्रभु! मैं तुम्हें तब ही जानूंगा जब तुम मुझे इस बन्धन से दूर करोगे। प्रभु! मुझे पार करो, प्रभु! मैं संसार सागर से पार होना चाहता हूँ, यज्ञ के द्वारा, वेद रूपी प्रकाश के द्वारा प्रभु! मुझे पार करो।

हे महादेव! देवता तेरी पूजा किया करते हैं, तू वास्तव में लिंग स्वरूप है। यह संसार लिंगरूपों में उत्पन्न होता है। छः माह में लोक लोकान्तर रच जाते हैं। हे प्रभु! तू वास्तव में महादेव है, देवों का देव है। आज हम तेरी पूजा करने जा रहे हैं। तू हमारे जीवन का साथी है। आज हम अपने कल्याण की जिज्ञासा लेकर तुम्हारे समक्ष आये हैं।

हे प्रभु! आपको देवों का देव कहा है। क्यों कहा है, प्रभु? जो मनुष्यों के लिए देवता है जैसे बुद्धिमान, महान आत्माएं संसार में मनुष्यों का कल्याण करने के लिए आती है और उपदेश देकर के यहाँ से समाप्त हो जाती है। उन देवताओं ने भी उस महादेव को अपना देव चुना। आज तुम्हें उस महादेव की शरण में जाना है। प्रत्येक पुरूष और प्रत्येक देव कन्या को उस महादेव की शरण में जाना है। वह महादेव कल्याण करने वाला है। सृष्टि को नियन्त्रण में रखने वाला है। वह वास्तव में महादेव है।

हे परमदेव, कल्याण करने वाले! तू हमारा कल्याण कर। हम तेरे से याचना करने आए हैं। आज तू हमारी याचना को स्वीकार कर। हे देव! आज तू न होता तो हम तेरी याचना न करते, तेरी शरण में न आते। हमने विज्ञान से अच्छी प्रकार भी देखा है। अपने पूज्यपाद गुरूदेव की कृपा से लौकिक होकर भी देखा है। परन्तु उसमें कुछ नहीं मिला। अन्त में उस महादेव की शरण में ही जाना पड़ा। आज नास्तिक

तो यह कह रहा है कि जिसे, महादेव पुकारा जा रहा है। वह क्या पदार्थ है। वह इस आत्मा से जाना जायेगा। वह महादेव ऐसा पदार्थ नहीं जिसको हम तुमको स्पष्ट निर्णय करा दें। परन्तु समक्ष देखना है तो पूर्व तू अपने को जान और अपने को देख कि मैं कौन हूँ और कैसा हूँ। मैं आज जब अपने नेत्रों को नहीं देख सकता, तो उसको कैसे देख सकता हूँ। बिना विज्ञान के, बिना प्रकाश के जब मेरे में इतना प्रकाश नहीं कि मैं अपने नेत्रों को ही देख सकू, और आज हम उस महादेव को देखना चाहते हैं। वह महादेव तो उस महान अनुपम की कृपा से देखा जायेगा, जब तुम्हारा आत्मिक बल बढ़ जायेगा। मानवता विज्ञान के शिखर पर पहुँच जायेगी। तो हम आध्यात्मिक विज्ञान के शिखर पर पहुंच जायेगे।

हे परमात्मन! आपने इस संसार को रचाया है, इसका कल्याण करो। हम शरण में आए हैं। प्रभु! हमारा कल्याण कर, हम तेरी महानता चाहते हैं, उस महानता को लेकर जब संसार में विचरण करते हैं तो हे परमात्मन! वास्तव में हमारा कल्याण होता है। जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता हुआ अन्तरिक्ष में रमण करता है और उस समय, आपने जो सृष्टि के प्रारम्भ में नियम रचा, उस समय के अनुकूल विधाता! यह उस स्थान पर पहुँच जाता है जहाँ इसका भोग होता है।

हे विष्णु! तू इस संसार का कल्याण करने वाला है। आज हम तेरी महिमा का गुणगान गाते चले जायें। प्रभु! जब तेरी महिमा का गुणगान गाया जाता है, तो मार्ग में विचरने वाले, पक्षीगण और मांस भक्षण करने वाले सिंह जैसी योनि भी तेरी महिमा का गुणगान गाकर मुग्ध हो जाते हैं। हे प्रभु! यह तेरी अलौकिकता है। हे प्रभु! चाहे मृतलोक में रमण करने वाले प्राणी हों, जल में रमण करने वाले प्राणी हों, सूर्यलोक में रमण करने वाले प्राणी हों, चन्द्रलोक में रमण करने वाले प्राणी हों, ध्रुव और बृहस्पति लोकों में रमण करने वाले हों। परन्तु हे प्रभु! उन सबको आपका दिया हुआ जीवन है। आप उन सब का पालन पोषण कर रहे हैं।

हे परमात्मन! हमारे हृदय में माधुर्यता हो, हमारे हृदय में आलिङ्गन करने की शक्ति जैसे माता पुत्र का आलिङ्गन करने से उसे हृदयग्राही बना करके, प्रीति दे करके बालक को सन्तुष्ट कर देती है, इसी प्रकार हमारे हृदय का प्रभु हृदय से मिलान हो और समन्वय हो।

हे परमदेव! हमें भी जीवन दो, हम जीवन चाहते हैं। प्रभु! हम उस सृष्टि में पहुंच जायें, उस अमूल्य निधि को जान जायें, उस राष्ट्र में पहुंच जायें जहाँ प्रभु! आपकी महिमा का सूर्यास्त नहीं होता। प्रभु! यदि हमारे नेत्रों से हमारी अन्तरात्मा से, हमारे अन्तःकरण से, आपकी महिमा का अंकुर भी चला गया तो प्रभु! हम मृत्यु को प्राप्त हो गये।

हे प्रभु! हमें मृत्यु न दो। हम उन्नति चाहते हैं। संसार में सतोगुणता चाहते हैं। आज उन पदार्थों का पान करना चाहते हैं जिससे हमारा ज्ञान ऊपर आ जाये। और हमें शुद्ध और पवित्र बनाता चला जाये।

हे परमदेव! हमारा कल्याण करने वाले विष्णु! तू आ और हमारा कल्याण कर, आपको वेदों ने विष्णु कहा है। हे परमदेव! कल्याण करने वाले विष्णु! आज हम तेरी महिमा का पात्र बनना चाहते हैं, हमें कुपात्र न बना। अपनी इस वेद वाणी से हमें वंचित न कर, यदि हम आपकी वेद वाणी से वंचित हो गए, तो प्रभु! जानो हमारा जीवन मृत्यु को प्राप्त हो गया।

भगवन! तू भगवान राम जैसी आत्मा को उत्पन्न कर, जब भगवान राम जैसी आत्मा उत्पन्न हो जाएगी, तो वशिष्ठ मुनि भी कोई न कोई अवश्य उत्पन्न हो जाएगा। हे प्रभु! यदि तू संसार का कल्याण चाहता है, राष्ट्र का कल्याण चाहता है, प्रजा में शान्ति स्थापित करना चाहता है तो प्रभु! भगवान राम जैसी आत्मा को उत्पन्न कर, जिन्होंने अपने राष्ट्र के ऐश्वर्य का त्याग करके हे प्रभु! आपके बताए हुए आदेशों में संलग्न रहे।

हे प्रभु! हमें उस विज्ञान के मार्ग पर ले चल, जिस विज्ञान में जाकर हम इस प्रकृति को अपने अधीन बना करके इस पर शासन करें, हे प्रभु! हमें उस ऊँचे विज्ञान पर ले चल, जहाँ प्रभु हम तेरा गुणगान गाते रहें, हे प्रभु! हमें उस सृष्टि में ले चल जहाँ प्रभु! आपका सूर्य अस्त नहीं होता। हे प्रभु! हमें इस संसार की इतनी ऊँची आवश्यकता नही है, जहाँ प्रातः सूर्य उदय होता है और सायंकाल को अस्त हो जाता है, प्रभु! इस सूर्य की आवश्यकता नहीं, प्रभु! उस सृष्टि की आवश्यकता है जिस सृष्टि में आपका ज्ञान रूपी सूर्य किसी प्रकार शान्त न हो सके।

हे परमात्मन! यदि आपने वेद संसार के कल्याण के लिए रचा है, तो हे प्रभु! इस

आधुनिक काल में एक भगवान कृष्ण जैसा, एक भगवान राम जैसा उत्पन्न कर, जिससे तेरे वेद की रक्षा हो, तेरे ज्ञान विज्ञान की रक्षा हो। प्रभु! उन आत्माओं को संसार में प्रेरित कर, जो दैत्यों को नष्ट कर, देवताओं की रक्षा करने वाले हों। हे परमात्मन! उन माताओं को उत्पन्न कर, जो कारागार में रहकर प्रभु से याचना करने वाली हो। जिसको हमारे यहाँ माता यशोदा भी कहते हैं और माता देवकी भी। जो महान कंस के अत्याचारों से कारागार में है और माता यशोदा बालक का पालन कर रही है, आज उन महान आत्माओं की आवश्यकता है। जो दैत्यों को नष्ट करने वाली हों। प्रभु! हम यह उच्चारण नहीं कर रहे कि आप मनुष्य बन कर आइए, परन्तु उन आत्माओं को प्रेरित करें जो कि परम्परा से यहाँ चली आ रही हैं और संसार का कल्याण कर देती हैं वे यहाँ तेरी वेदवाणी का प्रसार करके उसी स्थान को रमण कर जाती है जहाँ से वह आत्मा आती हैं। प्रभु! हमारी याचना को स्वीकार कर और वह आत्मा अवश्य उत्पन्न कर। यदि ऐसा न हुआ, तो तेरे बनाए हुए विधान की, तेरे शिष्यों के बनाए हुए विधान की, मनु महाराज के विधान की और आपकी वेद वाणी की रक्षा न हो सकेगी।

हे परमात्मन! तू कितना ऊँचा महान वैज्ञानिक है जिसका कोई प्रमाण नहीं। प्रभु! आपने अन्तःकरण ही नहीं संसार में नाना लोक लोकान्तरों को रचाया है, चन्द्र, सूर्य जैसे लोकों को रचाया है जिनमें एक अमूल्य प्रकाश है, एक अमूल्यत्व है और उसमें तेरी दी हुई सविता रूपी सत्ता है। हे परमात्मन! तेरी सविता सत्ता को पान करता हुआ यह अमूल्य सूर्य प्रातःकाल से विचरण करता है और संसार को प्रकाश देता है। किसी काल में नम्र प्रकाश देता है, किसी काल में तेजस्वी प्रकाश देता है और किसी काल में माधुर्य प्रकाश देता है। उस महान अमूल्य प्रकाश को पान करके प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या और संसार का जितना भी प्राणीमात्र है उस महान अमूल्य सूर्य से अपने जीवन के लिये कुछ अमूल्यतायें अपने में धारण करता है और प्रत्येक प्राणी जिस जिस मार्ग में भी है उस मार्ग का वह प्रदर्शन करने वाला बन जाता है जैसे सर्पयोनि है, वह प्राणी है परन्तु सूर्य सविता से प्रकाश पाता है, नम्रता भी पाता है, तेजस्वित्ता भी पान करता है और भी श्रेष्ठताओं को पान करता है परन्तु उसके मुखारविन्द में उन सब ही अच्छाइयों

का विष बन जाता है।
हे प्रभु! तू कितना ऊँचा शिल्पकार है, तेरी शिल्पकारी को जानकर आज मानव चकित हो जाता है, आपने जो यह सृष्टि चक्र रचाया है यह जो हमारे दृष्टिगोचर है। हे भगवन! जब प्रलयकाल आता है न प्रति यह जो वस्तुयें रचाई हुई हैं यह कहाँ चली जाती है। हे प्रभु! तेरी महिमा कितनी अलौकिक है, कितनी विचित्र है।
हे गायत्री! तू संसार में उज्ज्वल पदार्थ है। तेरा अनुकरण करते हुए ऋषि मुनि अपने पवित्रत्व को पान करते हैं। हृदय में एक ज्योति, ज्ञान में आनन्द और ज्योति जाग्रत हो जाती है जिसके लिये हमारे ऋषि मुनियों का प्रातः भूषण रहा है। हे भगवन! तेरी ये करूणामयी वाणी के लिये हम बारम्बार प्रार्थना करते चले आ रहे हैं। परमात्मन! आपका रचाया हुआ यह महान संसार कैसा व्याकुल हो रहा है। इसको पवित्र बनाने के लिये आप पुनः से संसार में कोई न कोई ऐसा प्रयत्न कीजिए, जिससे आपका रचाया हुआ यह संसार पवित्र का पवित्र बना रहे। इसमें किसी प्रकार की त्रुटि ना आ सके, मानव एक दूसरे के रक्त का पिपासु ना बन सके, एक दूसरे का पथ प्रदर्शक बनें। प्रभु! करूणा कीजिए, दया कीजिए, हमारे नेत्रों में वह अमूल्य सत्ता दीजिए। हे आनन्द में रमण करने वाले देव! आपको बारम्बार नमस्कार है।
हे माता गायत्री! हम तेरे द्वार पर आ पहुंचे हैं तू अपने महान पुत्रों को अपने कण्ठ से अग्रणीय कर, जिससे हे माता! तेरे कण्ठ में, तेरी आनन्दमयी, करूणामयी गोद में विराजमान होकर उस सुख को अनुभव कर सकें। हे माता! तू सुख देने वाली है, पवित्र बनाने वाली है तुझे वेदों में गायत्री कहा है। आदि ब्रह्मा ने तुझे पुत्री बनाया है। तू संसार की माता और ब्रह्मा की पुत्री कहलाती है। हम तेरी गोद में आना चाहते हैं, जिसमें धारण होकर, हे माता! हमारा हृदय पवित्र बन सकें, तू वास्तव में गायत्री है।
जितने भी वेद मन्त्र हैं उन वेद मंत्रों में पवित्र छन्द हैं ओ३म् की व्याहृतियों से बंधा हुआ जो मन्त्र हैं उन सब का नाम ही गायत्री हैं, क्योंकि हम गायत्री में रमण करते हैं और जिस गायत्री में यह संसार समाहित हो जाता है।

हे गायत्री माता! तू हृदय को पवित्र बना, तुझे वेदों ने गायत्री कहा है, दुर्गा कहा है, क्योंकि तू मानव के दुर्गुणों को शान्त करने वाली है हम तेरी गोद में आए हैं हमारे हृदय को पवित्र बना, हमारी इस करूणामयी वाणी को पवित्र बना। हमारी जितनी भी कामनाएं हैं वह सब पवित्रत्व में हों। हे अग्रणी भूषण! यह संसार तेरा अनुकरण करता है आज हम भी तेरा अनुकरण करते हुए, उस पवित्र बेला में, उस पवित्रता में, तेरी गोद में आये हैं, आज तुझे प्राप्त करना चाहते हैं आज मानव के हृदयों को पवित्र बना।

हे इन्द्र! तू कितना पवित्र है, तेरी महिमा इस संसार में अलौकिक है। हे इन्द्र! जब तू अपनी पत्नी शचि के सहित संसार में रमण करता तो यह संसार पवित्र होता चला जाता है, हे देव! तू बकासुर से संग्राम करने वाला बन, जब तेरा बकासुर से संग्राम होता है तो वह नष्ट हो जाता है और संसार का कल्याण हो जाता है। हे इन्द्र! तू इस बकासुर का हनन कर जो हमारे जीवन और नाना प्रकार के ऐश्वर्य को समाप्त करता चला जा रहा है। अपने नाना तीखें शस्त्रों से इस बकासुर को नष्ट करो।

हे परमात्मन इन्द्र! आप हमारी भिन्न भिन्न रूपों से रक्षा करते हैं, हमारी रक्षा करो। कैसी रक्षा करो आनन्दमयी रक्षा करो। हे इन्द्र! आज हमारी आत्मा में शान्ति प्रविष्ट कर, हमारी ही आत्मा में नहीं इस संसार को शान्ति दे। हे विधाता! जब यह महान संसार शान्तिदायक बन जाता है वो उस समय संसार में मानवता ओत प्रोत होती है। प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है?

सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि मुनियों ने भिन्न भिन्न रूपों में अनेक अलंकारों में उस परमात्मा को अंकित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अंकित कर लेना है, उस परमात्मन इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन! तू हमारा कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

हे राष्ट्रपिता राजन! तू हमारा कल्याण करने वाला है। यदि हम परमपिता परमात्मा की रचना पर विचार विनिमय करते हुए आज अपने जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं, अपने जीवन को उस स्थान पर ले जाते हैं जहाँ इसे प्रकाश का एक अंकुर भी प्राप्त नहीं होता, तो परमात्मा की क्या दयालुता रही। परमात्मा की रचाई हुई अमूल्य सृष्टि के आश्रित हो करके मनुष्य कर्म किया करता है जैसा आज के वेद पाठ में परमात्मा को दुर्गेवेती शब्दार्थों से प्रतिपादन किया जा रहा है। हे दुर्गेवेती! तू वास्तव में हमारे दुर्गुणों को शान्त करने वाली है। तू आ और हमारा कल्याण कर, हमारे जीवन में एक अनुपम अमृत प्रदान कर, जिससे हमारा जीवन इस संसार सागर से पार होता चला जाये।

हे परमात्मन! हमारे जीवन को अग्नये बनाइये, जिससे हमारा जीवन ऊर्ध्वगति वाला हो, निचली गति वाला न हो। ध्रुव आदि लोकों को जानने वाला हो। हम नाना लोकान्तरों को जानने वाले बनें।

हे प्रभु! पृथ्वी के गर्भ में हमने जो अन्न इत्यादि स्थापित कर दिये है ये हमारे लिए सुन्दर हो। ये हमारे राष्ट्र के लिए, मानवता के लिए लाभदायक हो। हे परमात्मन! आपकी यह कितनी अनुपम ध्वनि है, जब हम ध्वनि का उच्चारण करते हैं तो वह कितनी अनुपम ध्वनि है, जिस ध्वनि से यह पृथ्वी मण्डल ही नही सूर्य मण्डल और ध्रुव, चन्द्र इत्यादि सभी उसका वर्णन किया करते हैं और उसके ऊपर वीणा के सहित अनुसन्धान किया जाता है तो उसमें हमें विचित्रता प्रतीत होती है।

हे परमात्मन! हमारी कृषि को पवित्र बना, हमारी कृषि लाभदायक हो, इसमें किसी भी प्रकार का ऐसा परमाणु न हो जिससे यह नष्ट हो जाए।

हे देव! तू वास्तव में संसार का कल्याण करने वाला है, तू संसार को प्रकाश में ले जाने वाला हैं, तू राष्ट्र को प्रकाश में ले चल। प्रभु! जब यह राष्ट्र आपका बनाया हुआ है तो इसे प्रकाश में रमण कराते चलो, जिससे इस राष्ट्र में, इस समाज में सब आपका धन्यवाद करते हुए अपने जीवन में उच्च प्रदर्शन करने लगें, जीवन के जो महान सुन्दर अंकुर हैं वह पुनः से वृक्ष बनकर पनपने लगें। राष्ट्र सदाचारिता में आता जायेगा। यहाँ दुराचारी प्राणियों की आवश्यकता नहीं। परमात्मा की सृष्टि में तो सदाचारी, सत्यवादी और विवेकी पुरूषों की

आवश्यकता है।

हे परमात्मन! हे देव! संसार को, भारत भूमि को पुनः से ऊँचा बनाना है तो भगवन! दयानन्द जैसे योगी उत्पन्न कर, जिससे संसार ऊँचा बन जाए। प्रभु! मेरी यह वेदना है आप स्वीकार कीजिए।

आओ, आज हम उच्चारण करते चले जाएं, कि वह देव की, जो अनुपम देन है वह जो अनुपम प्रकाश है, उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका धन्यवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है आचार्य कहता है हे महा प्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है जीवन को उदबुद्ध करने वाला है तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है अहा, तेरी ही रचना हमें व्याप रही है तेरी ही महानता में हम सदैव रमण करने वाले हैं, हमें नाना प्रकार का जो अज्ञान आता है वह आपको दूरी कर देता हैं, अपने हृदय से, तो हमें अज्ञानता की प्रतीति होने लगती है, तो प्रभु हम चाहते हैं कि हम सदैव प्रकाश में रमण करते रहें, आनन्द में ही रमण करते रहे। क्योंकि हमारा जीवन सदैव आनन्द के लिए उत्पन्न होता है जीवन की प्रतिभा को जानने के लिए उत्पन्न होता है, हमें ऐसा महान कोई कार्य प्रदान करो जिससे भगवन! हम आपकी अनुमप कृपा के द्वारा, आपकी महिमा को जान करके, अपने मनस्तव को जानते चलें जाएं। हे प्रभु! यह आपकी महती, यह आपकी अनुपम देन हैं। जब हम यह विचारते हैं कि आप इस जगत में प्रोत प्रोत हो रहे है, आप इस जगत में व्याप्त है तो प्रभु हम कहाँ जाए, किस आँगन में रमण करें?

आज के हमारे, इस मनोहर वेद पाठ में कहीं शकुन्तका, कहीं धेनु और कहीं वसुन्धरा का वर्णन आता चला जा रहा था। हे माँ वसुन्धरा! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाली है, हे कल्याणमयी माँ! हम तेरे समीप आयें हैं। तू हमारा कल्याण करने वाली है।

जीवन को उन्नत बनाना चाहते हैं। माँ! हम तेरे गर्भ में बसते है। इसीलिए तुझे वसुन्धरा कहते हैं। वसुन्धरा का अभिप्रायः है कि हम जिसमें बसते हैं। बसने के

नाते उसको वसुन्धरा कहते हैं। आओ, हम उस महामना मातेश्वरी वसुन्धरा की याचना करते चले जाएं। जो हमारा लालन पालन करने वाली है, हमें महान जीवन प्रदान करने वाली है, जीवन को उगलने वाली है, हम माता वसुन्धरा को बारम्बार नमस्कार कर रहे हैं। इसीलिए वेद ने नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना करते हुए कहा है, वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची हैं, जैसे वुसन्धरा पृथ्वी को कहते हैं जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाली है, वह वसुन्धरा, जिसके गर्भ में हम नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा पनपते रहते हैं। तो इसीलिए हम उस माता को वसुन्धरा कहा करते हैं। जब हम यह विचारने लगते हैं कि मानव जीवन से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध है जब हम यह विचारने लगते हैं, तो हमारा हृदय विशालता को प्राप्त होने लगता है, जब हम अपने मन में यह अनुभव करते हैं, अपने हृदय में स्वयं यह अनुभव करते हैं कि वह तो वास्तव में महामना है, वह माता महामना है। हमारा कल्याण करने वाली है।

तो आज हम उस माता के गर्भ में, उस वसुन्धरा के आँगन में आयें हैं। आज का हमारा वेद का पाठ, यह उच्चारण करता चला जा रहा था। हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की महिमा का जहाँ गुणगान गाया जाता है, तो वास्तव में जब उसको तत्त्व तत्त्व से विचारने लगते हैं तो हमे यह प्रतीत होने लगता है कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड वुसन्धरा का स्वरूप माना गया है। क्योंकि वसुन्धरा महामना प्रभु को भी कहते हैं, जिसके गर्भस्थल में यह सर्वत्र जगत विराजमान हो रहा है, जिसकी प्रक्रियाओं से यह पृथ्वी क्रियामान हो रही है, सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी के आश्रित भ्रमण कर रहा है। आज हम उस परमपिता परमात्मा को भी वसुन्धरा के रूपों में परिणत किया करते हैं और उसका गुणगान गाते हैं गुणों का गुणवादन करते हुए कहा करते हैं कि वह जो प्रभु है जो संसार का रचयिता है, जो क्रियात्मक क्रिया में ला रहा है परन्तु वही जगत में व्याप रहा है उसी की महान ज्योति से हम सर्वत्र ब्रह्माण्ड में, सर्वत्र प्राणी, प्राणी मात्र उसी की ज्योति से व्याप रहा है, उसी के आँगन में रमण कर रहा है। तो जब हम सब उसी की ज्योति में व्याप रहे हैं तो वह हमें व्यापक बनाता चला जा रहा है, प्रकाशमयी बनाता चला जा रहा है। तो

हम उस प्रभु के गुणगान गाने में सदैव तत्पर रहते हैं। उसी के गर्भ में यह सर्वत्र लोक लोकान्तर विराजमान है, जिसकी महिमा आदि ऋषियों ने बड़े सुन्दर रूपों से वर्णन की है।

तो हे प्रभु! वास्तव में तो आपकी सर्वज्ञ महिमा को हम नहीं जान सकेंगे, क्योंकि हमारे में अल्पज्ञता है। हम वायु मण्डल में रमण कर सकते हैं, चन्द्रमा और सूर्य के पास जा सकते हैं, परन्तु हमारे में इतनी शक्ति नहीं है कि आपके राष्ट्र से, आप की जो इतनी विशाल रचनात्मकता है उसकी सीमा से दूर जा सकें। हे देव! हम आपका कहाँ तक गुणगान गायें, वाणी में इतनी शक्ति नहीं प्रभु!।

हे परमात्मन! किसी भी लोक लोकान्तर का प्राणी हो, परन्तु जब उसे अशान्ति प्राप्त होती है तो वह तेरी ही शरण में आ जाते हैं। वह उस परमपिता परमात्मा के शरणागत आ करके और अपनी मानवता को शान्ति प्रियता में बना करके प्रस्थान कर जाते हैं। इसी प्रकार, आज हम उस प्रभु की याचना करते हुए उस ब्रह्म की याचना करते हुए, आज हम अपने जीवन को ऊंचा बनाते चले जायें। क्योंकि मानव किसी भी आँगन में भ्रमण करने वाला हो, परन्तु एक समय उसका हृदय कष्टमयी प्रतीत होने लगता है। आज हम प्रभु से याचना करें, कि हे प्रभु! तू संसार के प्राणियों को ऊंचा बना, हे प्रभु! उनके द्वारा ओज और तेज हो।

हे प्रभु! इन्हीं से यह समाज और राष्ट्र ऊँचा बना करता है। जब हम प्रभु की याचना करते हैं तो हमारा हृदय गद् गद् होने लगता है। मैं अपने प्रभु से यह कहा करता हूं। कि हे परमात्मन! तू कितना उज्ज्वल है, तेरी महानता कितनी महान है, तू उस महानता का दिग्दर्शन करता है जिसे मानव किसी काल में स्वप्नत में भी दृष्टिपात नहीं कर पाता। आज हम उस मनोहर देव के द्वारा जाना चाहते हैं। प्रायः कोई भी मानव हो परन्तु वह प्रभु के लिये उत्सुक रहता है। क्योंकि आनन्द जो प्राप्त होता है। आनन्द के लिये वह अपने जीवन को सदैव प्रगतिशील बनाता रहता है। यह उत्कृष्ट इच्छा जागृत रहती है कि मैं उस आनन्द को प्राप्त करने वाला बनूं जिस आनन्द में, वास्तव में परम अग्रित आनन्द प्राप्त होता चला जाये।

आज हम उस मनोहर देव की याचना करते हुए, उस देव की शरण में जाते हुए, हम उसकी याचना करते चले जाते हैं। और कहा करते हैं कि हे प्रभु! तू हमें अपनी

गोद में धारण कर, अपने आँगन में धारण कर, जिससे हमारा जीवन सुगठित रहेगा। तो भगवन! हमारे जीवन में अशान्ति नहीं रहेगी।

हे प्रभु! हे मेरे जीवन के संचालक! तू आकर हमें तपस्वी बना। हमें योगी बना। प्रभु! अब मुझे किसी ने संकेत कराया है कि तू तपस्वी बन। हे प्रभु! मेरे जीवन में, मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की त्रुटियां हैं, उन त्रुटियों को मुझ से दूर करो, मैं त्रुटि दायक नही बनना चाहता। प्रभु! मेरा जीवन आपकी कृति में हो, मेरा जो जीवन है, मेरी जो संकलन धारा है, वह आपकी कृति में होनी चाहिए।

सुन्दर यज्ञ करने को देव पूजा कहा जाता है, जिसमें देवताओं का आदर होता है, देवताओं के लिए हवि प्रदान करते हैं। यज्ञमान की अवस्था सौ वर्षों की होनी चाहिए। हे परमात्मन! आप अधिक से अधिक अवस्था दीजिए, जिससे विधाता! हमारा जीवन संसार में पवित्र बनता चला जाये, और हम अपनी मानसिक इन्द्रियों को सुन्दर करते चले जायें। हम परमात्मा की कृति को हम उस महान परमात्मा की कृति को जानें, परमात्मा को प्रातः और सांयकाल धन्यवाद करते चले जाएं, जिससे हृदय में मानसिक बल आता चला जाये और जिस मानव के हृदय में मानसिक बल होता हैं वह किसी भी काल में रूग्ण नही होता, उसको किसी प्रकार का भी दुःखद नही होता। वह सदैव एक रस बना रहता है। निर्द्वन्द्व बना रहता हैं ब्रह्मचर्यता को ले करके चलता है, अग्नि को ले करके चलता है, प्रकाश को ले करके चलता है और उस प्रकाश में वह प्राणी रहता है, जिसके पश्चात अन्धकार नष्ट होता चला जाता है।

हे परमात्मन! तू कितना अनुपम है। प्रभु! तेरी रचना कितनी अनुपम है। तेरा रचाया हुआ संसार यह कितना अनुपम है, यह मानव शरीर कितना अनुपम है। प्रभु! तेरी महानता का वर्णन किया जाता है। हम भी किया करते है और भी नाना किया करते है। परन्तु हे मेरे देव! तेरी महिमा बड़ी अनुपम है, विचित्र है। आज हम तेरी महिमा को विचारते रहते है।

हे परमात्मन। तू अनन्त हैं, तेरी जो रचना है वह भी महान और अनन्त है। तू नियन्ता है, ब्रह्माण्ड को सुन्दर रूपों से और केवल संकल्प मात्र से रचता है उस प्रभु का जो संकल्प है वह कितना महान है। आज जब हम प्रभु का गान गाते हैं तो हमारा

हृदय गद् गद् होने लगता है।
हे मेरे प्रभु! तू कितना अनन्तवान हैं। हे प्रभु! तू कितना अनन्तता में परिणत रहता है। वास्तव में तेरी महिमा सुन्दर है। प्रभु! आप ने मानव समाज को, मानव समाज को ही नहीं, प्रभु! आप ने प्राणी मात्र को उत्पन्न किया है और कितनी सुन्दर प्रतिभा है, कितना सुन्दरवाद है उसका वर्णन नही किया जा सकता। प्रभु! यह जो वाक् सृष्टिवाद में रमण करते हैं तो प्रभु! आप ने सृष्टि के प्रारम्भ में कितना सुन्दर रूपक दिया है, कितनी सुन्दर आपकी रचना है, वनस्पतियों के रस को एकत्रित करके आपने प्राणी मात्र की उत्पति की। यह कितनी सुन्दर है इसका वर्णन कैसे किया जा सकता है। वाणी में इतनी शक्ति नही है। माता के शरीर को किस प्रकार का रचा है प्रभु ने कि सूक्ष्म बिन्दु पर जाने के पश्चात उस बिन्दु में जो कण होते हैं, वह जिस स्थान का बिन्दु होगा, उस स्थान को वह परमाणु अकृत होता हुआ उस स्थल में रमण करता चला जाता है। माता के गर्भस्थल से हम जैसे पुत्रों का जन्म होता है। उस प्रभु की कितनी सुन्दर रचना है, वर्णन नही किया जाता।
हे देव! तू कितना महान है, वास्तव में जैसे सन्निधान से हम स्वीकार करते हैं वैसा ही प्रतीत होता है। ऐसा कहते हैं, दृष्टिपात पाया जाता है कि यह तो माता पिता के सम्बन्ध से ही उत्पन्न होते हैं। वास्तव में यह वाक् यथार्थ है। परन्तु माता पिता को तो यह ज्ञान नही है कि यह परमाणु कहाँ का है, कहां हमें स्थिर करना है। परमाणु वनस्पतियों का जो रस है अन्न का जो रस है नाना वनस्पतियों का जो रस है वह माता के गर्भस्थल में स्थापित हो जाता है। नाना इन्द्रियों का रसावादन अर्पित होता हुआ, उस तपस्वी, उस प्रभु ने, सृष्टि के प्रारम्भ से सुन्दर संकल्प किया था और वह कैसा सुन्दर संकल्प था? तेरे ही गर्भ से प्रजा का जन्म होगा। यह संकल्प है उस प्रभु का, और उस यन्त्र को प्रभु ने निर्धारित कर दिया। माता से पुत्री का जन्म होता है तो उसमें इसी प्रकार की नस नाड़ियों का संगठन होता हुआ, उसकी सुगठिता होती हुई उसका रक्त उसी प्रकार सुगठित होने लगता है। परन्तु यह सब प्रभु की अलौकिकता का एक सुन्दर मार्ग है। वास्तव में प्रभु की अलौकिकता हमे प्रतीत हो रही है। आज जो मानव यह उच्चारण करने लगे कि

मेरा ही जीवन है मुझे यह वास्तव में अधिकार है तो वह वास्तव में सुन्दर नही होता। प्रभु कितना महान है उस प्रभु की अलौकिकता, कितनी उज्ज्वल है, कितनी सुन्दरता में परिणत रहती है। आज हमें वेदों के पठन पाठन में वेदों की परम्पराओं में क्या प्राप्त होता है? प्रभु की महती, प्रभु की अलौकिकता का वर्णन और उसकी महती का वर्णन हमें दृष्टिपात आता है तो हमारा अन्तरात्मा प्रसन्न होने लगता है। हमें यह अनुभव होता है कि यह जो हमारा अन्तरात्मा है यह कितना उज्ज्वल है वेद का ऋषि कहता है आचार्य कहता है कि वास्तव में हमें प्रभु! की महिमा को विचार विनिमय करना है, वेद के पठन पाठन का कर्म करना है।

हम सदैव यह याचना करते रहते हैं कि हे प्रभु! हम यह नहीं चाहते कि संसार में हम आपसे विमुख हो जाएं। हमारी यह सदैव याचना रहती है कि हम किसी भी स्थान में हों, किसी भी आश्रम में हों परन्तु, हम सदैव आपकी महिमा का गुणगान गाते रहे हैं। क्योंकि आपकी अंजलियों में भगवन! यह विश्व पनपता रहता है। हमारी भी एक कामना है कि हमारे मन की जो प्रवृत्तियाँ हैं वह जैसे सूरज की किरणों से प्रातःकाल का अनुभव होता है। इसी प्रकार हे प्रभु! हमारा जो जीवन है वह आपकी महिमा में ही पनपने वाला हो। जिससे हे देव! आपकी महिमा का गुणगान गाते हुए यह जो सागर हमें प्रतीत हो रहा है जिसमें नाना प्रकार के कटु शब्दों की प्रतिभा हमारे समीप आती है, नाना प्रकार की धाराएं आती हैं, मान अपमान की तरंगें उत्पन्न होने लगती है। प्रभु! मैं यह नहीं चाहता हूँ।

प्रभु! मानव जब तेरे द्वार पर आता है तो प्रभु! आप वास्तव में उसका कल्याण तो कर ही देते हैं। परन्तु मेरे हृदय की सदैव यह कामना रहती है कि यदि आपने मुझे संसार में जन्म दिया है तो प्रभु! मेरे जीवन को ऐसा मुग्ध बनाइए जैसे पृथ्वी होती है। वह मेरी मां है। और कैसी मां है? वही अन्न देती है, और वही हमारे मल मूत्र को अपने में समेट लेती है। वह कैसी भोली मां है, जिसकी ममता का कोई प्रमाण नहीं दे सकता। इसी प्रकार हे प्रभु! आप ममतामयी हैं। जैसे हम आपके प्रति कटु हो सकते हैं। परन्तु आप अपनी छाया को हमसे दूर नहीं करते। इसी प्रकार हमारी इच्छा है कि हम कटुता को त्यागते चले जाएं। आपकी शरण में

आते चले जाएं। एक समय वह आयेगा, प्रभु! जब हम आपकी गोद में, आपकी अंजलि में आ करके हमारा जीवन पुलकित और पवित्र बन सकता है।

हे प्रभु! वास्तव में हम आराधना के तो योग्य हैं ही नहीं, क्योंकि जन्म जन्मान्तरों के संस्कार हमें बाध्य करते रहते हैं। उनसे भी मैं पार होना चाहता हूँ। हे प्रभु! वास्तव में वे आपकी महिमा का गुणगान इतना तो नहीं गाने देते, जितना गाना चाहिए। प्रभु! वास्तव में मैं गाता हूँ, परन्तु सूक्ष्म गाता हूँ। वाणी का प्रसार भी होता है। परन्तु वह जो नाना जन्म जन्मान्तरों के, नाना अंकुर, मल इत्यादियों से अकृत हुए हैं उनसे मैं आपकी महिमा द्वारा दूर होना चाहता हूँ। यह नाना प्रकार के संस्कार बाधक बन करके आपकी शरण में नहीं आने देते, प्रभु!।

हे प्रभु! जहाँ आपके गुणगान गाने का अवसर प्राप्त होता है वहीं मानव यह कहता है कि मेरे पास समय नहीं हैं। हम भी कहते हैं कि प्रभु! आपके गुणगान गाने के लिए समय नही है। मिथ्या वाक्य उच्चारण करने के लिए बहुत समय है। नाना प्रकार के विडम्बना भरे शब्दों में, विडम्बनामयी जीवन के लिए बहुत समय है, परन्तु हे प्रभु! आपके गुण गान गाने के लिए समय नही है। वह हमारी कितनी मूढ़ता रहती है। हम कितने तुच्छ बन चुके हैं। हे प्रभु! संसार में हम यह नहीं चाहते। मेरा जीवन, जब मुझे स्मरण आने लगता है तो मुझे स्वयं धिक्कारता है। परन्तु जीवन की जो धिक्कारता है वही तो मुझे बाध्य करती है कि अब हम अपने जीवन की झांकी में पंहुचे, जहाँ हम सदैव आपके गुणगान गाते रहे। जब जागरूक हों, तभी आपका गुणगान गाते हों। प्रभु! मैं यह चाहता रहता हूँ कि आपका गुणगान गाऊं। इसीलिए प्रभु! मैं बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ। मेरे हृदय में सुन्दर और महान प्रेरणा देते रहिये, और मुझे महानता में ओत प्रोत कर दीजिए।

हे प्रभु! जब मैं शान्त मुद्रा में विराजमान होता हूँ। तो मैं संसार की तार्किकता में चला जाता हूँ। तो विचारता हूँ कि तू है ही नहीं, कहीं यह आता है कि तू है, तो पापों का यह क्षेत्र क्यों हैं, इस प्रकार भगवन! पुनः मैं अपने तर्क से स्वतः तेरे समीप आना चाहता हूँ। कहीं उनको भी त्याग देता हूँ। प्रभु! ऐसा क्यों हैं, इस जगत में? मुझे यह प्रतीत नहीं होता। इसका कोई उत्तर दे सकता है? इसके उत्तर तो, सदैव आप की शरण में आने से ही स्वतः नष्ट होते चले जायेंगें। प्रभु! यह

उसी काल में दूर होगा, जब हम तेरी शरण में आ जायेंगे। उससे पूर्व यह शान्त नही होगा। एक वैज्ञानिक संसार के परमाणुवाद में जाता है, एक परमाणु को प्रकृति में से निकालता है, दूसरा परमाणु उसके लिए उद्यत हो जाता है, तीसरा परमाणु उद्यत हो जाता है। अणुओं के क्षेत्र में जाकर नाना प्रकार के अणु उसके समीप आ जाते हैं। अन्त में वैज्ञानिक कहता है कि हे माता! तेरी गोद में आ करके, तेरी महिमा को नही जान पाता। अन्त में वह कहता है कि प्रभु! तेरी ही महिमा का उदगम् मेरे हृदय में परिणत रहता है। हे प्रभु! मैं जान नही पाया। हे प्रभु! आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है। जिसने इस जगत को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वस्व जीवन, मानव शरीर को बना दिया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड बना दिया है यह कैसी सुन्दर विवेचना है, यह कैसी सुन्दर रचना है आपकी, मैं तो इसको किसी काल में भी नही जान पाता। मैं तो यही नही जान पाता कि प्रभु! मेरे श्रोत्रों से एक क्षण समय में कितनी तरंगें उत्पन्न होती हैं कितने शब्दों की उदबद्धता होती है भगवन! मैं तो संसार में कुछ नही जानता। मुझे तो भगवन! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस संसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ जाये। क्योंकि संसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियां चलती हैं, तो क्या वह सुन्दरियां मेरे लिए किसी काल सुन्दर बन सकती है? मेरे अन्तःकरण में यह संस्कार जमते चले जायेंगें। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है उसमें भगवन! मैं यह बीज बोता ही रहूंगा? यह मैं नही बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज, अंकुर रूप में मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका स्रोत ही नष्ट हो जाये और वह स्रोत्र उस काल में नष्ट होगा, जब प्रभु! मैं आपको सर्वस्व में दृष्टिपात करूंगा और मैं मौन हो जाऊंगा, कि संसार में कुछ है ही नही, प्रभु! मैं तो उस काल में ही उत्तम बन सकता हूँ। उससे द्वितीय काल में मेरे लिए कोई मार्ग हैं ही नही प्रभु!।

हे प्रभु! इस संसार से हमें मुक्त करा, हमें इस संसार से उदासीन बना। इस संसार का जो नाना प्रकार का विडम्बनावाद है, जिसमें एक मानव दूसरे से दुःखित होता रहता है, मानव के कर्तव्यवाद के कारण राष्ट्र में प्राणी रहता है। समाज में, जगत में, जो वातावरण है, जो व्यवहार है, जो दुर्व्यवहार है उसी से मानव दुःखित

होता रहता है। जब उसे कोई मार्ग प्राप्त नहीं होता है तो जब वह प्रभु से आराधना करता है, कि मैं दुःखित हूँ। तब वह कहता है भगवन! मुझे उदासीन बनाईये, इस जगत से मुझे मुक्त कराईये। वह विरक्त बनने की प्रभु से प्रार्थना करता है, वह प्राणी दुःखित हो रहा है क्योंकि वह बाह्य जगत को दृष्टिपात करता है। तो बाह्य जगत को दृष्टिपात करने वाला प्राणी सदैव दुःखित होता है।

हे प्रभु! इस संसार को पुनः से ऊँचा बनाना हैं तो यहाँ भगवान राम जैसी आत्मा का पुनः से जन्म होना चाहिए। वह संसार में आनी चाहिए, क्योंकि जब भगवान राम होने चाहिए। तो माता कौशल्या जैसी माता भी होनी चाहिए। क्योंकि ऐसी पवित्र आत्मा के लिए, माता भी तो ऐसी होनी चाहिए। जो त्याग और तपस्या में सदैव परिणत रहने वाली हों।

हे परमात्मन! तू कितना उज्ज्वल है, तेरी महानता का जब हम गान गाते हैं, तेरी महानता का जब दिग्दर्शन करने लगते हैं तो हमारे कण्ठ में कोई शब्द ऐसा नही रहता है। जो आपके लिए उच्चारण किया जा सके। क्योंकि आप इतने उज्ज्वल हैं, इतने शक्तिशाली हैं। क्योंकि आप वाणी की वाणी हैं, श्रोत्रों के भी श्रोत्र हैं। हे प्रभु! आप के गर्भ में यह सर्वत्र जगत वशीभूत हो रहा है तो आपकी महिमा, आपकी उज्ज्वलता का हम कहां तक वर्णन कर सकते हैं। वेदपाठ कहता चला जा रहा है कि मानव को अहिंसा परमोधर्म का पालन करना चाहिए। ज्ञान मानव के समीप नियुक्त किया जा रहा था। वाणी से इसका प्रसारण होता चला जा रहा था, वास्तव में वेद अनन्त ज्ञान युक्त है क्योंकि परमात्मा परमानन्द है, आनन्द में भी पूर्ण आनन्द है। उसका ज्ञान भी अनन्त है वह स्वयं भी अनन्त है हम उस परमपिता परमात्मा की महती आनन्दमयी जो ज्ञानयुक्त है उसका सदैव उच्चारण करते रहें।

हे प्रभु! तेरा जो अमृतमयी ज्ञान है, अमृतमयी जो तेरी नम्रता है, अमृतमयी जो तेरी उदारता है, अमृतमयी जो तेरा उद्गम है, अमृतमयी जो तेरा हृदय है, अमृतमयी जो तेरा यह जगत है, अमृतमयी जो मेरे ज्ञान की एक कामना है, प्रभु! उसमें मैं अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहता हूँ। हे प्रभु! तू कितना उद्गम है, तू कितना उदार है, तू कितना महान है, तू कितना व्यापक है, तेरी कितनी उज्ज्वलता इस

संसार में व्याप रही है। हे प्रभु! तुम कितने व्यापक हो, और मैं कितना अल्पज्ञता में रमण करता हूँ।

प्रभु! मुझे यह प्रतीत नहीं कि इससे आगे मुझे कौन सा भोजन प्राप्त होगा। परन्तु प्रभु! आप मेरे उस भोजन को भी जानते हैं। जो आगे मुझे प्राप्त होने वाला है। परन्तु उसमें जो अमृत मुझे प्राप्त होगा, उसको भी आप स्वतः जानने वाले हैं। परन्तु मेरे लिए कोई मार्ग ऐसा नहीं है, मेरे लिए कोई स्थान ऐसा नहीं है, जहाँ प्रभु! मैं पापकर्म करने के लिए उद्यत हो जाऊं। प्रभु! वह कौन सा स्थान है, जहाँ मैं पाप कर सकता हूँ, प्रभु! पाप मैं उस काल में करता रहता हूँ जब आपका जो आनन्दमयी स्रोत है वह मेरे से पृथक् हो जाता है। हे प्रभ! मैं उस आनन्दमयी जो ज्ञान है, अमतमयी जो पवित्रता है मैं उसको अपने से दूर नहीं चाहता। हे प्रभु! मैं आपको बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ। आप मेरी इस प्रातःकाल की नमः को स्वीकार करो, क्योंकि आप उदार हैं, महान हैं, पवित्र हैं, शुद्ध हैं, आनन्द के स्रोत हैं। हे प्रभु! इसलिए मैं आपको बारम्बार नमस्कार कर रहा हूँ। हे आनन्दमयी ज्ञानस्रोत! तू कितना पवित्रवत है कि मैं आपके चरणों में कितना सौभाग्यवत बन गया हूँ। मुझे आपके गुणगान गाने का बारम्बार सौभाग्य प्राप्त होता रहता है। वे मानव तो संसार में बड़े सौभाग्यशाली होते हैं, जो प्रभु! आपका गुणगान गाते रहते हैं, आपकी महिमा का बखान करते हैं, आपकी रचनात्मक कला का वर्णन करते हैं। हे प्रभु! जैसे आप उदार हैं ऐसे मुझे भी उदार बनाइये, मुझे भी भगवन! ऐसे आनन्दवत स्रोत बनाइए, अन्यथा प्रभु! मेरा जगत में बनेगा क्या।

हे प्रभु! जहाँ तक हमारी वाणी कार्य करती है, वहाँ तक तो शब्दों का उच्चारण करना हमारे लिए कल्याणवत होता है। हे देव! तू कितना अनुपम है, जब हम तेरी महिमा का गुणगान गाने लगते हैं।

तो हमारा हृदय हमारी जो मस्तिष्क की एक देन है वह तेरे में ही हमें ओत प्रोत होती प्रतीत होती है हे प्रभु! यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है जिस संसार में मान अपमान की तरंगें मुझे छू रही हैं मुझे जो नाना प्रकार की विडम्बना मस्तिष्क में आती है, हे प्रभु! उस विडम्बना को मैं नही चाहता, मैं उस मान अपमान को भी नही चाहता, जो मेरे जीवन के महान शत्रु बने हुए हैं, प्रभु! मैं उस शत्रुता को

भी नहीं चाहता, जो संसार के लिए महान घातक और जीवन को महान अधोगति में ले जाने वाला है।

प्रभु! मेरा जो क्रियात्मक जीवन है मैं उसे सदैव चाहता रहता हूँ कि मेरा जीवन इस संसार में कर्मठता को प्राप्त होता रहे। क्योंकि कर्मठता ही तो जीवन है अकर्मण्यता ही मृत्यु हैं, जिसे हमें जानना है हम सदैव अपने जीवन में विचार विनिमय करते रहते हैं। हे भगवन! तू वास्तव में विचारकों का भी विचारक है सदैव अखण्ड रहने वाला है तेरा संसार में कोई विभाजन भी नही कर पाता, तू इतना महान है ओर विभु माना गया है जो सर्वत्र ओत प्रोत है। मैं आपके चरणों की वन्दना करने आ रहा हूँ, प्रभु! यह जो अन्तरिक्ष है यह आपका मस्तिष्क ही है, प्रभु! ये जो दिशाएं हैं यही तो आपकी भुजाएं हैं यह पृथ्वी ही तो आपके तालु का कार्य कर रही है, भगवन! आप जो पृथ्वी पर विचरने वाले नदीवत हैं यह आपके नाना स्रोत हैं, आपके शरीर के स्रोत हैं पर्वत अस्थियों का कार्य करते रहते हैं। भगवन! यह जो सारा जगत है यह एक ब्रह्म के स्वरूप में मुझे दृष्टिपात आ रहा है। प्रभु! यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है यह क्या है? इसको मै जान नही पाता, जहाँ केवल अपने ही मानववत को नष्ट किया जाता हो। प्रभु! मुझे यह जगत सुन्दर प्रतीत नहीं होता, मुझे तो केवल एक ब्रह्म ही प्रतीत होता है जिसका यह विराट ब्रह्माण्ड एक शरीरवत प्रतीत होता है।

हे प्रभु! हे देव! हे सच्चिदानन्द! हे सर्वत्र रहने वाले! हे अखण्ड! हे सदैव रहने वाले प्रभु! तू भगवान राम जैसी पवित्र आत्माओं को जन्म दे। और माता कौशल्या जैसी माताओं को जन्म दे। हे प्रभु! यह संसार यह समाज तभी ऊँचा बनेगा। राष्ट्र और समाज उस काल में महान होते हैं। जब महान व्यक्ति होते हैं समाज में, तब यह संसार प्रायः ऊँचा बनता चला जाता है।

हे माता! तू मेरे हृदय को उज्ज्वल बना, तुझे वेदों ने श्रद्धामयी कहा है, तुझे दार्शनिक कहा है, सविता कहा है। हे माँ! तू मेरे हृदय को पवित्र बना। जिस प्रकार सुयोग्य माता अपने बालक को गर्भ में ही पवित्र बना देती है, हे ममतामयी माँ! वास्तव में संसार की माता, एक समय त्याग देती है। परन्तु तू ऐसी भोली पवित्र माता है तू अपने प्यारे पुत्रों को कदापि नहीं त्यागती। सांसारिक जो माता होती

है वह गर्भ से उत्पन्न करने वाली होती है एक समय वह अपने पुत्र को त्याग देती हैं। हे माँ ममतामयी! हे सविता! हे माँ! हे माँ कल्याणी! तू मेरा कल्याण कर, क्योंकि तू मुझे त्याग नहीं रही है। आज मैं तेरे द्वार पर आया हूँ, आज तू मेरी इस विनय को स्वीकार कर।

हे प्रभु! तू कितना विचित्र है। हे प्रभु! तू कितना महान है। हे भगवन! हमारी वाणी गुणगान गाने में असमर्थ हो जाती है। आज मैं अपने प्यारे देव की महिमा का गुणगान गाने चला हूँ। हम अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते रहें, वे महिमावादी है, उस प्रभु के हम कितने ऋणी रहते हैं, आज हमें उस ऋण को विचार लेना चाहिए। क्योंकि हम उस प्रभु के सदैव ऋणी बने रहते है।

हे परमदेव! कल्याण करने वाले विष्णु! आज तेरी महिमा का पात्र बनना चाहते हैं, प्रभु! हमें कुपात्र न बना। अपनी इस वेदवाणी से हमें वंचित्त न कर, यदि हम आपकी वेदवाणी से वंचित्त हो गए, तो प्रभु! जानो हमारा जीवन मृत्यु को प्राप्त हो गया।

प्रभु महिमावादी है, प्रभु अनन्त है। जिस प्रकार प्रभु! अनन्त है इसी प्रकार प्रभु की वेद विद्या भी अनन्त है।

हे विष्णु! तू कितना पवित्र है। हे विष्णु! जब हम तेरे आँगन में आते है तो तू हमारे जीवन को सुन्दर बना देता है। हम तेरी उस महान अग्निमय ज्योति में ध्यानावस्थित हो जाते हैं। हे विष्णु! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है। तू हमारा कल्याणकारी कहलाया जाता है महत्ता की वेदी पर मानव सदैव रमण करता है। आप ऐसे पवित्र देव है, आप ऐसे अगम्य हैं, आप ऐसे आनन्दमयी ज्योति हैं, जिस ज्योति को धारण करने के पश्चात और ज्योतियों की आवश्यकता नहीं रहती।

प्रभु! आप कैसी मेरी पवित्र माँ है। हे माँ! तू कितनी भोली है, तू कितनी पवित्र है। हम तेरे आँगन में आते हैं, तू विष्णु रूप से भी कहलाई गई है। शक्ति रूपों से भी तेरा प्रतिपादन किया गया है।

माँ! तू कितनी भोली है। जब हम तेरे आँगन में आते है, तो ज्ञान और विवेक से युक्त होकर के आते हैं, माँ! वास्तव में तू हमारे हृदय का भरण कर देती है। तू,

कैसी महत्ती है। तू कैसी ममतामयी है, बालक क्षुधा से पीड़ित हो रहा है माँ, तू उसे लोरियों का पान कराती हुई, उसकी क्षुधा और पिपासा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार हे मां! मैं तेरे द्वार पर, विवेकी बन करके आना चाहता हूँ। मुझे शक्ति दे, बल दे, ओज दे, तेज दे। जिससे माता मैं तेरी उस महान ज्योति का दर्शन कर सकू। तेरी जो महान ज्योति है तेरी जो करूणामयी ज्योति है, जिस करूणा से हे विष्णु! आप संसार का लालन पालन करते हैं। मैं भी तेरे द्वार पर आना चाहता हूँ। उस पिपासा में मैं रमण करना चाहता हूं। जिस पिपासा के लिए सदैव मानव अपने में ही परिणत हो जाता है।

ब्रह्म की चेतना ही संसार में अपना कार्य कर रही है। ब्रह्मविद्या ही मानव को ऊंचा बनाती है, और राष्ट्र में धर्म को ला देती है। इसलिए आज हमें ब्रह्मविद्या की आवश्यकता है। जब प्रत्येक मानव धर्मनिष्ठ और ब्रह्मनिष्ठ होता है तो उसी काल में उसकी विचारधारा में एक महानता का दिग्दर्शन और उसके हृदय में महानता की प्रतिष्ठा हो जाती है। जिससे वह महान कहलाता है। मानव की जो वाणी होती है उसका सम्बन्ध अग्नि से होता है। इसलिए हमारे यहाँ किसी किसी ऋषि ने अग्नि को भी उद्गाता कहा है। आज तो हम प्रभु की याचना कर रहे हैं। हे प्रभु! तू स्वयं यज्ञ है। तेरी महानता इन वेदों में परिणत हो रही है। वेद की जो अनुपम धारा है वही प्रकाश, मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है। क्योंकि वेद की जो अनुपमता है, ब्रह्मविद्या है, महानता है, उसमें उसका एक एक शब्द पक्षपात से रहित है। उसी को तो ब्रह्मविद्या कहते हैं। क्योंकि परमात्मा में रूढि नहीं होती, इसलिए वेद में भी रूढ़ि नहीं है। इसलिए वेद के अनुसार मानव को अपने जीवन को ऊंचा बनाना चाहिए। जो मानव रूढ़ियों में परिणत हो जाते हैं, उनके जीवन में विनाश हो जाता है। उनका जो मानसिक संकल्प होता है, उसकी धाराओं में भिन्नता आ जाती है।

हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए यज्ञशाला में परिणत होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जायें। नाना प्रकार का संकल्प हो, संकल्प के साथ में हमारा एक मानसिक संकल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात जब हम उसमें आहुति देते हैं तो वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है।

देवतागण उसको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या, समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं। परमाणुवाद को ऊंचा बनाते चले जाते हैं। क्योंकि यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है। द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और वह परमाणु जब अग्नि उद्गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका साकल्य उसमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान गति होती है, कितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का संकलन प्राप्त होता चला जाता है।

हम उस मार्ग के लिए परम्परा से ही याचना करते आए हैं, उस प्यारे प्रभु से, कि हे प्रभु! तेरा बनाया जो यह मानवीय शरीर है, तेरी प्रेरणा से प्रेरित हो करके जो क्रीड़ा कर रहा है। हे प्रभु! हम आपको और अपने को, दोनों का समन्वय करना चाहते हैं।

हे प्रभु! आप हमारे महान देव हैं। जीवन में प्रकाश को उद्बुद्ध करने वाले हैं। आप को अग्निमय स्वरूप माना है क्योंकि अग्नि आपकी चेतना की, अग्नि स्वरूप से बनी हुई है। हे प्रभु! हम आपकी आराधना करने आए हैं और हमारी जो यह आराधना है इसको स्वीकार करो।

हे प्रभु! आप हमारे पापों का मोचन करने वाले हैं क्योंकि कर्मों के अनुसार जब हमें फल प्रदान कर देते हैं तो उससे हमारे जीवन में एक नवीनता का प्रसार होने लगता है। तो हे प्रभु! आप हमारे जीवन के साथी हैं। हमें प्रकाश चाहिए जो आपकी ही महिमा से प्राप्त होता है। हे प्रभु! आपका जो दर्शन है, आपका जो प्रकाश है, उसे जब हम अपने में दृष्टिपात करते हैं तो प्रभु! हम उसका वर्णन नहीं कर पाते। क्योंकि वह ऐसा अद्वितीय प्रकाश है, जिस प्रकाश को पान करने के पश्चात मानव के जीवन में एक महत्ता दिखने लगती है।

आज हम अपने प्यारे प्रभु के द्वार पर जाना चाहते हैं। उस सन्धि के, पुलकित द्वार पर जिस सन्धि के समय में हम प्रभु से विच्छिन्न हो गए थे। जिस प्रकार रात्रि और दिवस दोनों का विच्छेद हो जाता है परन्तु जब वह सन्धि काल आता है तो दोनों

का मिलान हो जाता है। इसी प्रकार हम यह चाहते हैं कि प्रभु से हमारा जो विच्छेद हो गया है, हमारा और आपका जो विछुड़न हो गया है, उसमें हम मिलान चाहते हैं, पुनः से सन्धि चाहते हैं और वह सन्धि किस काल में होगी? जब हे प्रभु! आप हमारे ऊपर अनुपम कृपा करेंगे अथवा दया करेंगे और हम उस महान सन्धि करने वाले, पथ के पथिक बन जायेंगे। तो प्रभु आपसे हमारी सन्धि होकर के हमारा जीवन पुनः से प्रकाशमय बन जाएगा।

हे प्रभु! मानव के अन्तःकरण का, लोभ मोह के कारण, हमारे शरीर का, हमारे जीवन का, जो छेदन हो रहा है उसको हम पुनः से, जीवन को ऊँचा बनाने के लिए उस मार्ग को अपनाना चाहते हैं, प्रभु! जिससे हमारे जीवन में यह जो छेदन हैं, वह दूर हो जाएं और प्रभु! जैसे हम आपके द्वार से आए थे, उसी प्रकार आपको प्राप्त हो जाएं। हे भगवन! हम जो नाना प्रकार की, भयंकर अग्नि में परिणत हो गए हैं, आलस्य और प्रमाद में इतने चले गए हैं प्रभु! उस आलस्य और प्रसाद को हम दूर करके उस पथ को अपनाना चाहते हैं जिस पथ के अपनाने से आपकी और हमारी दोनों की सन्धि हो जाए। हम लाखों करोड़ों वर्षों से अथवा अरबों वर्षों से न मालूम कितना समय हो गया, प्रभु! जब आपसे हमारा विच्छेद हो गया था। हे प्रभु! हम पुनः से सन्धि चाहते हैं और उस वैदिक प्रकाश को अपनाना चाहते हैं। जिस प्रकाश में हमारी और आपकी दोनों की सन्धि होगी। प्रभु! वह एक पथ है, वह प्रकाशमय पथ कहलाया गया है। प्रभु! आज हम उस पथ को वास्तव में पुनः से अपनाना चाहते हैं। हे भगवन! यह संसार तो विडम्बनित होता रहता है यहाँ नाना प्रकार के विवाद होते रहते हैं। हे प्रभु! हम तो आपके समीप आए हैं। आपकी दया चाहते हैं। आपकी महत्ता चाहते हैं, जिस महत्ता के प्रकाश में हम अपने जीवन को वास्तव में सूक्ष्म से सूक्ष्म बनाकर के और आपके प्रति आपकी सूक्ष्मता में हमारा सन्निधान अथवा दोनों की सन्धि हो जाए, प्रभु! जैसे दिवस और रात्रि की सायंकाल को दोनों की सन्धि होती है।

हे मेरे प्रभु! हे देव! आपको वेद ने माता कहा है कैसी माता है? वसुन्धरा है। क्योंकि जब आपने यह जगत रचा था, तो प्रभु आपने जगत को रचते हुए उस समय मानव जीवन के लिए संध्या को उत्पन्न किया, जो संध्या पुरातन काल में

द्यौ लोक में रमण करती थी अथवा यह देवताओं के लोक में रमण करती थी। देवता इसके आनन्द से, आनन्दमय होते थे, आनन्द को पान करते रहते थे। उसी प्रकार भगवन! आज हम आपसे अपनी सन्धि करते हुए उस संध्या को अपनाना चाहते हैं जिस संध्या को देवतागण पान करते थे। देवतागण भी इस सन्धि से देववत को प्रायः प्राप्त होते रहते थे। तो इसीलिए प्रभु! हम आपके द्वार पर जाना चाहते हैं।

वेद का ऋषि कह रहा था यह जो अग्नि है यह विप्र है यह कैसा विप्र है। जो हमें ऊर्ध्व गति को ले जाने वाला है। ऊर्ध्व का वाचन कराने वाला है। इसीलिए आज जब हम तेरे द्वार पर आचमन करते हैं, अमृतमय जल के रूप में जीवन विराजमान है, जब हम आचमन को करते हैं तो वास्तव में हम यह स्वीकार करते हैं कि हमारा जो जीवन है वह सत्यमय रहना चाहिए। ऐसा जीवन होना चाहिए भगवन! जिससे हम आपके द्वार पर जाने के लिए तत्पर हो जाएं। कैसा जीवन हो? सत्यमय हो और प्रभु! हम आपके समीप जाने से पूर्व यह विचार लेते हैं कि हमारा जीवन यह जो जल है यह एक प्रकार का आनन्दमय आसन के तुल्य है। आज हम इस अमृतमय रूपी आसन को अपनाना चाहते हैं और उसमें सुख अनुभव करते हैं। तो वह जो सुख की बेला है उसमें हम अपने विचारों को रखकर जब हमारे द्वारा कोई नहीं होता तो उस समय हम अपने विचारों को आपके समीप उद्बुद्ध करते हैं। यह संसार तो भगवन! इस प्रकार का है कि यदि यहाँ किसी का अपना मन कोई आन्तरिक विचारधारा प्रकट करेगा तो कोई अपमानित करेगा कोई मानित करेगा। कोई मग्न होकर हर्ष ध्वनि करेगा। कोई किसी प्रकार के हर्ष से युक्त हो जाएगा, प्रभु! यह जगत तो बड़ा विचित्र है। परन्तु इससे हम पार होना चाहते हैं। यहाँ भगवन! मानव मानव के रक्त का पिपासु रहता है। हम यह भी नहीं चाहते भगवन! जब संसार में आप ही हमारा एक लक्ष्य रहेंगे तो न तो हम संसार के आँगन को दृष्टिपात करेंगे और न हम यह दृष्टिपात करेंगे कि एक मानव दूसरे मानव के रक्त का पिपासु है यह भी हम स्वीकार नहीं करेंगे। तो भगवन! इस अवस्था के लिए हमें आपकी करूणा और दया की प्रायः आवश्यकता रहती है। तो हे मेरे देव! हम तेरे आँगन में सदैव आना चाहते हैं। आपको वेदों ने विष्णु कहा

है, आत्मा, परमात्मा कहा है। हम आत्मा हैं, आपके आँगन में आना चाहते हैं। क्योंकि आप परमात्मा हैं। हम आत्मा हैं तो आप परमात्मा हैं और परमात्मा के ही भगवन! द्वार पर हम अपने को ऊँचा बनाने के लिए तत्पर रहना चाहते हैं। हमारी संसार में कोई इच्छा नहीं है। हम संसार के वैभव को नहीं चाहते। हम विज्ञान की उड़ान भी नहीं चाहते। प्रभु! हम तो केवल यह चाहते हैं कि हमें आपका दिग्दर्शन हो।

हे परमात्मन! तू अनुपम है। तू संसार को चेतना प्रदान करने वाला है। प्रभु! हम भी उस महान चेतना को चाहते हैं। जिस चेतना में मानव को अन्धकार प्राप्त नहीं होता। सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। जो मानव उस महान ब्रह्म मुख से परिणत हो जाता है। ब्रह्म चेतना में रमण करने लगता है। सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म प्रतीत होने लगता है। तो वह मानव इस संसार में उज्ज्वलता को प्राप्त होता हुआ, उस महान मण्डल में परिणत हो जाता है। जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ सूर्य भी अस्त नहीं होता, जहाँ न सूर्य उदय होता है न अस्त होता है, एक रस रहने वाला है। इसीलिए आज हम अपने उस प्यारे प्रभु का गुणगान गाने के लिए आये हैं। हे परमात्मन! आज हम उन महान लोकों को चाहते हैं, जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ सदैव प्रकाश होता है। इसलिए हम आपकी आराधना करते हुए, इस मानवता से, देवत्व में जाना चाहते हैं। देवत्व से भी प्रभु! हम महादेवत्व बनना चाहते हैं। जिससे भगवन! हमारे हृदय में किसी प्रकार की विडम्बना न होने पाये। क्योंकि वह जो बिडम्बना होती है, यह मानव के विनाश का मूल कारण बनती चली जाती है। प्रभु! हम अपने हृदय में प्रसन्नता चाहते हैं, महत्ता चाहते हैं, उज्ज्वलता चाहते है। जिससे भगवन! हमारा जीवन एक आनन्द में परिणत होता हुआ, महत्ता की वेदी पर रमण करता हुआ, इस संसार सागर से पार होने लगता है।

भगवन! हम सदैव इस समाज में, इस संसार में रूढ़िवाद नहीं चाहते। क्योंकि रूढ़िवाद भी मानव के हृदय में नाना प्रकार के संस्कारों को जन्म देता है। यदि संस्कार होंगे तो हमारा आवागमन रहेगा। आवागमन रहेगा तो "पुनरपि मरणम् और पुनरपि जीवनम्", हमें प्राप्त होता रहेगा। भगवन! हम ऐसा भी नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हम सदैव उस आनन्दमय प्रकाश में रमण करते रहें। जिस प्रकाश

में रमण करने के पश्चात, जहाँ न सूर्य उदय होता है और न सूर्य अस्त होता है। प्रभु! जहाँ सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। उस महान अनुपम ज्ञान को चाहते हैं। उस विवेक को चाहते हैं। भगवन! हम उस रूढ़िवाद को नहीं चाहते हैं। क्योंकि रूढ़िवाद भी मानव के विनाश का कारण बन जाता है। इसीलिए भगवन! हमारी यही प्रबल इच्छा रहती है कि हम रूढिवाद को नहीं चाहते। हम तो भगवन! सदैव उस महत्ता को, उस पवित्रता को चाहते हैं जहाँ हम अन्तरात्मा के ज्ञानी बनते रहें। अन्तरात्मा को जानते हुए हमारा जीवन एक प्रतिभाशाली बनता हुआ इस संसार सागर से पार हो जाए।

वेद के प्राचार्यों को तू संसार में क्यों नहीं जन्म देता। जिससे मानव वेद का पठन पाठन करके, समाज की कुरीतियों को नष्ट करने वाला, और शुद्धता को धारण करने वाले पण्डित होने चाहिए। जिससे हमारा जीवन पवित्रता में परिणत होता हुआ, महानता की वेदी पर रमण करता हुआ, इस संसार में मानवता का प्रसार कर सकें। आज हम उषर्बुध बनने के लिये प्रेरणा कर रहे थे और प्रभु से यह याचना कर रहे थे कि हे प्रभु! हमारे जीवन को प्रकाश में ले चल, अन्धकार को त्यागने का हम प्रयास करें, मृत्यु हमारे जीवन में न आये। जहाँ मानव इस प्रकार की विवेचना करता है, जहाँ मानव इस प्रकार की आभा में रमण करता है वह मानव वास्तव में पवित्र बन जाता है और वह परमात्मा की अमरावती को प्राप्त करता है।

पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज के द्वारा जो प्रभु विनय को गाया गया है उसे संकलित किया गया है, यह प्रभु विनय का पाठन करने से दिव्य संस्कारों की प्रस्थापना होगी।

ब्रह्मयाग में ब्रह्म की मीमांसा की जाती है ब्रह्म के ऊपर चिंतन किया जाता है यह ब्रह्मयाग क्या है? ब्रह्मयाग उसे कहा जाता है जहाँ ब्रह्म का विचार होता है। एक मानव संध्या काल में विराजमान होता है तो सबसे प्रथम वह अपनी इन्द्रियों को स्पर्श करता हुआ, वह अपनी इन्द्रियों के विषयों को जानता हुआ, वह परमात्मा से अपना तन्मय चाहता है। और यह कहता है हे प्रभु! मेरी इन्द्रियाँ स्वस्थ हो, मेरी इन्द्रियाँ पवित्र हो, प्रभु! जिससे मैं आपके द्वार पर आ जाऊं आपकी प्रतिभा को विचारने लगे। तो सबसे प्रथम मानव को ब्रह्मयाग में परिणत हो जाना चाहिए। जब मेरे पूज्यपाद गुरूदेव कजली वनों में विराजमान होते थे तो जब वह प्रातःकाल में ब्रह्मयाग करते थे, ब्रह्म की प्रतिभा के ऊपर चिन्तन करना प्रारम्भ करते थे तो नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को निहारने लगते थे और यह विचारने लगते थे कि प्रभु! तू कितना विचित्र है, तेरी कैसी विचित्रता है। प्रभु! यह कैसा अनुपम जगत है कैसे लोक लोकान्तर हैं। प्रभु! तेरे राष्ट्र में एक दूसरा मण्डल एक दूसरे मण्डल से मिलान नहीं करता। कैसा चक्र चल रहा है। ऋत और सत में सर्वत्र जगत गति कर रहा है अपने अपने आँगन में गति कर रहा है। परन्तु एक दूसरे से मिलान नही हो पा रहा है। हे प्रभु! तू कैसा विश्वकर्मा है? आपकी कैसी अनुपमता है? मानव जब तेरे विषय में विचारने लगता है तो मौन हो जाता है।

दार्शनिक मुग्ध हो जाता है, वैज्ञानिक परमाणुओं में ओत प्रोत हो करके वह मौन हो जाता है। हे देव! तू कैसा विचित्र है, तेरी कैसी विचित्र रचना है जो मानव जान नहीं पाता। जब मानव तेरे वशीभूत होकर तेरी महती में परिणत हो जाता है तो वह संसार की आभा में इसको उच्चारण करने में असमर्थ हो जाता है।

हे मेरे देव! तू कितना करूणामयी हैं। प्राचार्यों ने जिस रूप में तूझे स्वीकर किया है अथवा उड़ान उड़ी हैं उन्हीं रूपों में तेरा दृश्य दृष्टिपात होने लगता है वह मेरा चैतन्य देव हैं जो मानव को ममतामयी के रूप में प्राप्त हो रहा हैं, हमें नाना प्रकार

की आभा प्रदान कर रहा है। हे परमात्मन! मेरे हृदय को उदार बना दो। हे प्रभु! मेरा हृदय बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों एक से रहने चाहिए, मेरे इस अन्तर्हृदय में छल कपट नही रहना चाहिए, यदि मै छल, कपट और मिथ्या उच्चारण करता रहा तो प्रभु! मैं माता के गर्भ में आवागमन मेरा लगा ही रहेगा। हे प्रभु! यदि मेरा अन्तर्हृदय और मेरा बाह्य हृदय, बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनो एक सूत्र में आ गए, एक ही हो गए, स्वच्छ हो गए, सत्यता में हम आरूढ़ हो गए, तो हम आवागमन के उस धाम, आवागमन की सीमा को हम दूर कर पायेगें। अन्यथा पुनरूक्ति मरणम् और पुनरूक्ति जीवनम् लगा रहेगा। हम आज जीवित हो गए हैं तो कल हम मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं पुनः पुनः शरीरों को धारण कर रहे हैं।

हे प्रभु! यह जो तेरा अनन्त जगत है, इसको मैं कैसे जानूं? इसको कैसे जान सकता हूँ प्रभु! आपकी अनन्तमयी जो सृष्टि है, अनन्तमयी जो ब्रह्माण्ड है उसको जानने में प्रभु! मैं सदैव असमर्थ रहता हूँ। हे भगवन! आप तो महान है, आप तो विचित्र कहलाते हैं।

हे प्रभु! यही मेरी कामना है, अन्तिम छोर में भी मैं यही चाहता हूँ कि मैं इस संसार में, जीवन नहीं चाहता हूँ। मैं मृत्यु नहीं चाहता हूँ। मैं तो प्रभु! एक रसता चाहता हूँ जिससे एक रस हो जाऊँ। और एक रस उस काल में होऊँगा, जब प्रभु! मैं आत्म लोक को जानने लगूंगा। मेरा आत्म लोक यह मानव शरीर है। प्रभु! यह आत्म लोक मेरा शारीरिक विज्ञान है, इसमें भौतिक विज्ञान भी है, आध्यात्मिक विज्ञान भी है। मैं आध्यात्मिकवाद को प्राप्त होता हुआ परमात्मा के अन्तर्हृदय में, हे प्रभु! मैं आपके हृदय को, अपने हृदय से मिलान करता हुआ, हे प्रभु! मैं एक महान बनता चला जाऊँ। जैसे भगवन! बाह्य जगत में आपका यह जो शरीर है, यह कैसा शरीर है? हे प्रभु! यह जो अग्नि है, यह आपका ऊर्ध्व मस्तिष्क कहलाता है। यह अग्नि प्रभु का मस्तिष्क है। चन्द्रमा, सूर्य प्रभु के चक्षु हैं। हे प्रभु! पृथ्वी आपके पाद कहलाते हैं ये आश्वासन जङ्घा के रूप में परिणत हो रही हैं। हे प्रभु! आपकी सात प्रकार की जो कृति सप्त अङ्ग कहलाते हैं। आपका जो हृदय है यह बाह्य जगत कहलाता है, हे प्रभु! आपका जो वायु है, वे कृतियाँ कहलाते हैं,

वे कृतियाँ वायु के रूप में गति कर रहे हैं। हे प्रभु! आपका जो यह ब्रह्माण्ड का स्रोत चल रहा है यह ऐसा विचित्र है कि इसको महान से महान बुद्धिमान साधक गण भी भगवन! आपको नेति नेति उच्चारण करके मौन हो जाते हैं।

हे प्रभु! इसी प्रकार हमारे इस मानव शरीर में, जिसमें आत्मा वास करता है, इसमें भी इसी प्रकार चक्षु है, मस्तिष्क है, हृदय है, घ्राण है, नाभि है, हे भगवन! इसमें से ही तो आत्मलोक की प्रतीति होती है।

तो प्रभु! मैं आपके हृदय में अपने हृदय का समन्वय चाहता हूँ। यह सर्व ब्रह्माण्ड आपके हृदय में, समाहित रहता है। ऐसे ही हमारे हृदय में भी राष्ट्र के राष्ट्र ओत प्रोत हो जाते हैं। सर्वत्र विश्व इसमें विद्यमान हो जाता है, तो हे प्रभु! दोनों का समन्वय हो जाए तो हमारा हृदय पवित्र हो जाएगा। प्रभु! हम चाहते क्या है? हमारी कामना क्या है? हमारी एक ही तो कामना है कि हमारा हृदय स्वच्छ बन जाए। हमारे हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो जाए। हम सत्य को स्वीकार करने लगें। सत्य क्या है? सत्य वह कहलाता है जो प्रभु का दिग्दर्शन है, सत्य मानवीय दर्शन है। मानवीय दर्शन क्या है? अपने में ही अपनेपन का दर्शन करना, वह मानवीय दर्शन कहलाता है।

इसीलिए हे प्रभु! मैं श्रद्धा के क्षेत्र में जाना चाहता हूँ। क्योंकि श्रद्धा हृदय में रहती है। प्रातःकाल की अग्नि हमें सङ्केत कर रही है। कि हे अग्नि! तू मित्र बन करके हमें प्रकाश देती हैं। हमारे इस मानव शरीर को क्रियाशील बनाती है। हे अग्नि! तू आग्नेय है। तू कैसा आग्नेय है? तू देवताओं का दूत है, तू देवताओं को, हवि बना करके, देवताओं को तृप्त कर देती है। तू कैसी हवि बनाती है? तू वैश्वानर बन रही हैं तू वैश्वानर बन करके इस विश्व को ज्योतिर्मय बना रही है। हे माता वसुन्धरा! हम तेरी गोद में आयें हैं, तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाली है।

हे माता वसुन्धरा! तू अपने में इस संसार को बसा रही है ये नाना पृथ्वियाँ, नाना जननी माताएं तेरे ही गर्भस्थल में वशीभूत हो रही हैं। माता के गर्भस्थल में संसार का प्राणी मात्र वशीभूत हो रहा है ये नाना लोक लोकान्तर इसी में वशीभूत हो रहे हैं। वेद का आचार्य चिन्तन करता हुआ कहता है कि हे प्रभु! तू माता बन करके इस संसार को धारण कर रही है कैसे धारण कर रही है? जैसे मानव को,

शिशु को माता अपने गर्भ में धारण कर रही है। इसी प्रकार यह नाना प्रकार का जो लोक लोकान्तर हमें दृष्टिपात आ रहे है इस संसार को तू धारण कर रही है। जैसे यह पृथ्वी नाना प्रकार के खनिजों की उत्पत्ति कर रही है, खनिजों को धारण कर रही है, इसी प्रकार इस पृथ्वी को आप धारण कर रहीं हैं। हे माता! ये नाना पृथ्वियाँ तेरे ही गर्भस्थल में ओत प्रोत हो रही है, जब विचारा जाता है कि वेद तुझे सु के रूप में परिणत कर रहा है, प्रभु! कहीं तुझे माता वसुन्धरा के रूप में वेद कहता है कि तू वसुन्धरा है तू सबको धारण करने वाली है नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को धारण करने वाली है, तब यह वैज्ञानिक तेरी आभा में, तेरे गर्भ में परिणत हो जाते हैं।

हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है, हे माता! तू संसार को धारण कर रही है, ये नाना सूर्य है ये एक दूसरे को प्रकाशित कर रहें हैं। सूर्य की नाना प्रकार की किरणें आ रही हैं, पृथ्वियों को तपा रही हैं, खनिजों को तपाया जा रहा है। वाह, मेरे देव! तू कैसा अनुपम, द्यौ से प्रकाश ले करके यह सब प्रकाशित हो रहा है उसमें से तरंगे उदबुद्ध हो रही हैं, वैज्ञानिक परमाणुवाद को जान करके परमाणु विद्या को जान करके नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं को अपने में धारण करते हुए, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करने लगते हैं। वह प्रभु कितना अनुपम है, वह कैसी मेरी प्यारी माता है, जो इस संसार को धारण कर रही हैं, इस ब्रह्माण्ड को धारण कर रही हैं और धारण करके यह गतिशील हो रहा है। केवल सन्निधान मात्र से ही यह गतिशील हो रहा है। एक चेतना का सन्निधान मात्र हुआ, उस चेतना का नाम ही महत्तत्व कहा जाता है। पंच महाभूतों का अपना स्वभाव जागरूक हो रहा है। हे महत्तत्व को धारण करने वाली! हे माता! हे वसुन्धरा! तू वास्तव में इस संसार को धारण कर रही है, जब यह विचार आता है कि ये लोक कैसे पनप रहा है? यह सूर्य द्यौ से कैसे सहायता ले रहा है? प्रकाश दे रहा है। पृथ्वी के गर्भ में कहीं जल शक्तिशाली बन रहा है, कहीं स्वर्ण की मात्राओं का निर्माण हो रहा है।

हे माता वसुन्धरा! तू सर्वत्र ब्रह्माण्ड की कुञ्जी हैं। तू सर्वत्र विज्ञान की भी एक आभा कहलाती है। वैज्ञानिक जन, इस विज्ञान से तेरे से ओझल नहीं हो सकते।

हे माता वसुन्धरा! हम सब तेरे गर्भस्थल में विद्यमान हैं, तू हमारा कल्याण करने वाली है, तू चेतना बन करके सबको चेतनित बना रही है, परन्तु वह चेतना ही इस ब्रह्माण्ड को चेतनित बनाती हुई ब्रह्माण्डवत कहलाती है। हे माता! तू सबको धारण कर रही है तूझे वेद धरणी कहता है, वेद तुझे वसुन्धरा कहता है कहीं वैष्णों के रूपों में दृष्टिपात करते हैं, तो तू दुर्गुणों को नष्ट करने वाली है। कहीं दुर्गुणों को नष्ट करने वाली तू दुर्गा के रूप में रमण करती हुई हमें धारण कर रही हैं, तू ही वसुन्धरा हमें अपने में बसा रही है। हे माता! तू हमारा कल्याण कर। तेरी ही आभा में, तेरी ही चेतना से यह जगत चेतनित हो रहा है। तू निर्माणवेत्ता बन करके निर्माण कर रही है तू कहीं पुल्लिंग कहलाती है, कहीं स्त्रीलिंग कहलाती है। तू एक महान बन करके संसार को धारण कर रही है। वेद का मन्त्र हमें यही कह रहा है, हे माता! वसुन्धरा! तू वसुन्धरा बन करके ही ब्रह्माण्ड की रचना कर रही है।

हे माता वसुन्धरा! तू चार प्रकार की वृत्तियों को आदान प्रदान कर रही है तेरे से उत्पन्न होने वाली, कहीं उद्भिज सृष्टि का निर्माण हो रहा है, कहीं अण्डज सृष्टि बन रही है तो कहीं जंगम सृष्टि का निर्माण हो रहा है यह सब माता वसुन्धरा के गर्भ स्थल में निर्माण हो रहा है।

हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है तू महानता में गति देने वाली है तेरे गर्भ में अग्नि का भण्डार विद्यमान है, तुझमें अग्नि पुञ्ज बना हुआ है। हे माता वसुन्धरा! हम तेरे द्वार पर आयें हैं, तू हमारा कल्याण कर। वसुन्धरा किसे कहते हैं? जो अपने में हमें धारण कर रही हैं। आत्मा को भी वसुन्धरा कहते हैं, क्योंकि वह मानव शरीर को धारण करने वाली है। हम परम्परागतों से ही उस महान देवी की महिमा को जानते हुए अपने में महानता की ज्योति को, आत्मा को, जागरूक करते हुए इस संसार सागर से पार हो जायें।

हे माता वसुन्धरा! तेरी ही गोद में सब विद्यमान है, वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में विद्यमान रहता है हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है, हम वसुन्धरा की गोद में, सब विद्यमान है और जब हम अपने में यह स्वीकार कर लेते है कि वह जो प्रभु वसुन्धरा है, उसी के गर्भ में, हम सब विद्यमान है तो अन्धकार समाप्त हो जाता है। प्रकाशमयी जीवन बन जाता है।

हे माता! वसुन्धरा तू हमारा कल्याण करने वाली है। हे चेतना! हे प्रकाश में ले जाने वाली! तू हममें पवित्रता को धारण करा।

हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है। तू वसुन्धरा है। तू अपने गर्भ में बसाने वाली है। जननी माता, पृथ्वी माता, चैतन्य प्रभु जो संसार का नियन्ता और निर्माण करने वाला है। इन तीनों में ही बस रहे है।

जो माता वसुन्धरा है यह हमारा कल्याण करने वाली है, अपने में हमें बसाने वाली है। हे माँ! तू विछिन्न है, एक साधक अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके प्राणायाम कर रहा है और साधना में रत्त हो रहा है वह साधना करता करता ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है प्राण को अपान में, अपान को प्राण में और प्राण को उदान में, उदान को समान में प्रवेश करके वह इन प्राणों की गतियों को रत्त कर रहा है। एक दूसरे में मिलान कर रहा है और मिलान करता हुआ प्राणेश्वर बन जाता है। यह जो प्राण सत्ता है, यही तो साधक को ऊर्ध्वा में ले जाती है साधक को महान बना देती है। तो हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भ में विद्यमान हो करके कोई साधक प्राणों की साधना कर रहा कोई विज्ञानवेत्ता बनने के लिए, नाना प्रकार के परमाणुओं का मिलान कर रहा है। हे माता! तेरे गर्भस्थल में विद्यमान हो करके कोई लोक लोकातरों में जाने के लिए तत्पर हो रहा है। तो वह कैसी मेरी प्यारी मां वसुन्धरा है? जो खाद्य और खनिज पदार्थों में निहित रहने वाला मानव, अपने में यह जानता है कि माता के गर्भ में विद्यमान हूँ। हे माता वसुन्धरा! तेरे ही गर्भ में यह सर्वत्र जगत वशीभूत हो रहा है।

हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है। हे माता! जब हम जननी माता के गर्भ से पृथक होते हैं तो पालना कौन कर रहा है? यह पृथ्वी पालना कर रही है। जब हम इस पृथ्वी माता वसुन्धरा के गर्भ से पृथक हो जाते है तो यह माता वसुन्धरा, जो मेरी विशेष वसुन्धरा माता है जिसको हम परमपिता परमात्मा भी कहते हैं। वह चैतन्य है, वह सर्वज्ञ है, उसके गर्भ में, अपने में पान करता रहता है और वह अपने गर्भ में हमें धारण करता रहता है। तो वह अपने में ही धारण कर रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्र उसका गुणगान गा रहा है जैसे माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है उसी प्रकार

प्रत्येक वेद का मन्त्र उस परब्रह्म परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है उसके आनन्दमयी रहस्यों का उद्घाटन कर रहा है अथवा उसका उद्गीत गा रहा है तो वह मेरी प्यारी मां वसुन्धरा है जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किये हुए है। प्रत्येक मानव, प्राणी मात्र इस ब्रह्माण्ड की आभा में रत्त होता रहता है। तो हे मेरी प्यारी मां! तू वसुन्धरा है। तू संसार को रचने वाली है, तेरे गर्भस्थल में जब हम विद्यमान होते हैं तो अन्धकार से रहित हो जाते हैं हम प्रकाशमयी बन जाते हैं हम वेदज्ञ बन जाते हैं, हम प्रकाश के लिए अपने अन्तःकरण में प्रकाशित हो जाते हैं।

तो आज हम माता वसुन्धरा की याचना कर रहे थे हे माता वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है। जब हम तेरे अन्तर्हृदय में, तुझे ध्यानावस्थित हो करके, तेरे ही गर्भस्थल में जब हम अपने को ले जाते हैं तो वसुन्धरा बन करके तू हमें बसा लेती है और नाना पदार्थों को हमें प्रदान कर देती है। वसुन्धरा क्या है? तो उसका एक ही अभिप्रायः है कि जिसके गर्भ में हम बस रहे हैं, वही वसुन्धरा कहलाती हैं। तो वैदिक साहित्य में जननी माता का नाम वसुन्धरा है और वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है, जब उस से उपराम होते हैं तो वह परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है, एक एक परमाणु में विद्यमान रहता है माता वसुन्धरा के रूप में उसका वर्णन किया जाता है तो वह माता वसुन्धरा कहलाती है।

हे वसुन्धरा! तू प्रायः हमारा कल्याण करने वाली है। हे वसु! तू अपने में बसा लेती है। माता जननी के गर्भ में, हम वशीभूत रहते हैं। निर्माणवेत्ता, निर्माण करता रहता है। परन्तु वह माता अपने में हमें वशीभूत कर लेती है, बसा लेती है, बसा रही है। नाना देवताओं का समूह प्राप्त हो रहा है और देवताओं के संरक्षण में हम पनप रहे हैं। वेद की आख्यिका कहती है कि जब हम माता के गर्भस्थल में विद्यमान होते हैं तो देवता ही तो हमारी रक्षा करते हैं। माता का जो गर्भाशय है वह देवताओं की स्थली माना गया है जहां देवता शिशु की रक्षा करते हैं, हम जैसे पुत्रों की रक्षा करते हैं। तो हे माता! तू हमें अपने में बसा लेती है। हे माता! उस समय तुझे वसुन्धरा कहते हैं। तू वसुन्धरा बन करके ही वसु को प्राप्त हो जाती है। जब माता के गर्भ स्थल में एक शिशु का आगमन होता है, तो माता को प्रतीत

नही होता, परन्तु देवताजन उसके अङ्ग सङ्ग विद्यमान हो जाते हैं और उसकी रक्षा करते रहते हैं।

हे माता वसुन्धरा! हम सब तेरे गर्भस्थल में विद्यमान हैं। हे माता! तुझे वेद वसुन्धरा कहता हैं, तू अपने में हमें बसाने वाली है। जब तेरे गर्भस्थल में वैज्ञानिक जन प्रवेश करते हैं तो हम तेरे गर्भ में चले जाते हैं। वहां नाना प्रकार का खनिज, खाद्यान्न को जानने लगते हैं तो मानव खनिजों को जान करके नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करने लगता हैं और वही निर्माण अपनी आभा में सदैव निहित रहता है। हे माता वसुन्धरा! तू सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने में बसा रही है, प्रत्येक मानव को बसा रही है, प्राणी मात्र तेरे में ही वशीभूत हो रहा है इसीलिए तुझे वेद वसुन्धरा के रूप में वर्णित कर रहा है।

हे माता वसुन्धरा! हम तेरे गर्भस्थल में संसार की सम्पदा को प्राप्त कर लेते हैं। नाना प्रकार के विज्ञान की ग्रन्थियों को हम प्राप्त कर लेते हैं।

हे माता वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है। हे माता! जब जननी माता के गर्भ से हम पृथक होते हैं तो यह पालना कौन कर रही है? जब मानव इस पृथ्वी माता के, वसुन्धरा के गर्भ से पृथक हो जाता है। तो चैतन्य माता प्रभु हमें अपने में बसा लेते हैं।

हे माता वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है। वसुन्धरा के गर्भ में हम जैसे शिशुओं को, तू अपने गर्भ में ध्यानावस्थित हो करके, महान से महान बालक को जन्म देने वाली है ब्रह्मवेत्ता बना करके तू अपने को सौभाग्यशाली बना। यहां माताओं का अपना बड़ा महत्व माना गया है इसमें तप की आवश्यकता है। हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। कल्याण कौन करता है? कल्याणकारी विष्णु कहलाता है। यज्ञोमयी विष्णु वह श्रेष्ठतम कर्म है। हे विष्णु! तू याग है। जितना भी संसार का सुकर्म है, जितने भी पितरयागी कहलाते हैं वे एक विष्णु के रूप में रत्त रहते हैं। एक सूर्य की आभा में निहित रहते हैं, यह जो परमात्मा का ब्रह्माण्ड है, यह तो अनन्तमयी कहलाता है यहां तो एक दूसरे में एक दूसरा लोक पिरोया हुआ है। एक माला बनी हुई तो वह विष्णु याग हो रहा है एक दूसरा, एक दूसरे का सहायक बना हुआ है।

हे विष्णु! तू पालन करने वाला है। हे विष्णु! तू अपने राष्ट्र को महान और उन्नत बनाने वाला है। क्योंकि विष्णु नाम हमारे यहाँ राजा को भी कहा जाता है। विष्णु नाम जहाँ राजा को कहा जाता है वहाँ विष्णु नाम आत्मा का भी है। जब तक इस शरीर में आत्मा विद्यमान रहता है तब तक मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। आत्मा के कारण ही मानव वेद के मर्म को जानने वाला है, वेद की प्रतिभा को जानने वाला है। इसीलिए हे विष्णु! तू कल्याणकारी है, तू ही विद्या को जानने वाला है। हमारे यहाँ सूर्य का नाम भी विष्णु कहा जाता है। यह विष्णु प्रकाश के देने वाला है, प्रातःकाल को उदय होता है और यह सांयकाल को अस्त हो जाता है। प्रातः से तपता रहता है, ऊर्जा देता है, प्रकाश देता है, पालना करने वाला है इसीलिए इसका नाम विष्णु है।

हे विष्णु! तू तपों में पालन करने वाला है। ऊर्ध्वा के देने वाला है, तू महानता में गमन कराता है जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वेद मन्त्रों के द्वारा आह्वान करता हुआ, जब वह अपने संकल्प से याग करता है तो उसके हृदय में एक देव भाव जागरूक हो जाता है।

हे विष्णु! तू रक्षा करने वाला है। तू सत्य में रत्त रहने वाला है। इसीलिए तू विष्णु कहलाता है। हे विष्णु! तू पालना के मूल में विद्यमान है। तो जो भी पालना के मूल में रहता है, उसी का नाम विष्णु है। इसीलिए हमें विष्णु की उपासना करनी चाहिए। हे विष्णु! तू कल्याणकारी है, कल्याण करने वाला है, इसीलिए हमारे यहां सूर्य का नाम विष्णु कहा जाता है। हे विष्णु! तू हमारा कल्याण करने वाला है। हे विष्णु! तू हमारा देवता है, हम देव भाव को प्राप्त होते हुए इस सागर से पार हो जायें।

हे विष्णु! तू कल्याणकारी है। हे विष्णु! तू देवत्व कहलाता है। और विष्णु कहते हैं जो सत्यमयी है और सत्यमयी राजा जब विष्णु बन करके अपने राष्ट्र का पालन करता है तो वह ध्रुवा और ऊर्ध्वा में रमण करता हुआ अपने में सजातीय बनता हुआ, मानव को सागर से पार करा देता है।

हे प्रभु! हे देव! तू सृष्टि का नियन्ता है, सृष्टि का निर्माण करने वाला है, सृष्टि को महान बनाता है। हम अपने को ऊँचा बनाने के लिए तेरे गर्भ में आना चाहते हैं

अग्नि को प्रदीप्त करके कहते हैं हे अग्नि! तू कहीं ब्रह्माग्नि बन करके रहती है, हे अग्नि! कहीं तू देवताओं का मुख बन करके रहती है, हे अग्नि! कहीं तू वैज्ञानिकों के मध्य में रमण करती रहती है, हे अग्नि! कहीं तू हमारे मानवीय हृदयों में प्रदीप्त हो करके उदबुद्ध बन जाती है, प्रकाश देने वाली बन जाती है यह कैसी पवित्र अग्नि है यह कैसी महान अग्नि है।

एक अग्नि को माता भोजनालय में पका रही है एक अग्नि से, ज्ञान से ऋषि तप रहा है। एक अग्नि से ज्ञान में तपोमयी विचारों से तप रहा है। वह त्याग की अग्नि बन करके रहती है यह अग्नि नाना प्रकार की अग्नि है। कहीं ब्रह्माग्नि बन करके, कहीं ब्रह्म की आभा में रमण करा देती है, यही अग्नि है जो शब्द को अपने ऊपर धारण करके लोकप्रिय बन जाती है। प्रातःकालीन याग में परिणत हो करके याग में उद्बुध करते हैं हे अग्नि! स्वाहा कह करके कहते है हे अग्नि! तू आ हम तुझे अपने में धारण कर रहे हैं। हे अग्नि! तू आ, हमें अपने में धारण कर। तू तेजोमयी बन करके संसार को तपा रही है हे अग्नि! तू तेजोमयी बन करके संसार को तपाने वाली बन।

हे उद्बुद्ध होने वाली अग्नि! तू मेरे समीप आ करके मेरे अन्तर्हृदय को ऊंचा बना। हे अग्नये! तू देवताओं का मुख है, तू सूक्ष्म बना करके देवताओं को प्रसाद रूप में प्रदान कर देता है। तू प्रसाद देता है। हे अग्नि देव! तू भस्म नहीं कर देता है। तू प्रसाद देता है। हे अग्नि देव! तू भस्म नहीं करता, परन्तु सूक्ष्म बना देता है। सूक्ष्म बना करके वह पर्जन्य रूपों में कहीं परिवर्तित हो जाता है। कहीं वायु मण्डल में मिश्रित हो करके, वह सुगन्ध के रूप को धारण कर लेता है।

प्रभु के राष्ट्र में जब हम गमन करते है तो हमारे जीवन में रात्रि भी नहीं होती। क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में सदैव प्रकाश रहता है और प्रभु के राष्ट्र में जाने वाले प्राणी के जीवन में प्रमाद नहीं होता, आलस्य नहीं होता, रात्रि नहीं होती। तो वह सदैव प्रकाश में रमण करता रहता है।

ब्रह्मयाग का अभिप्रायः है कि ब्रह्म का चिन्तन करना है। जिस ब्रह्म, परमपिता परमात्मा ने इस मानव शरीर की रचना की है इस रचना में क्या क्या इस शरीर में विद्यमान है उसको न वह माता जानती है न पितर जानता है, न आचार्य जानता

है, न आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जानता है। वह ऐसा गोपनीय विषय है, वह ऐसी गोपनीय रचना है, प्रभु की, जिसमें प्रभु का यशोगान गाना ही बहुत अनिवार्य है। क्योंकि जिस गृह में हमारा अन्तरात्मा वास करता है, हम वास करते हैं अरे, मानव उस गृह को ही नही जानते, कि इस गृह में क्या है, इस गृह में कितनी नस नाड़ियाँ हैं, कितना उसमें क्रियाकलाप हो रहा है इससे यह सिद्ध हुआ है कि सृष्टि के प्रारम्भ में प्रभु ने यह संसार सागर क्या संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है। यज्ञशाला निर्माणित होते ही, उसमें परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है और आत्मा, इस संसार रूपी यज्ञशाला का यज्ञमान है और पंच महाभूत इसमें आहुति दे रहे हैं। कोई उदगाता है, कोई अध्वर्यु बन करके उदघोष कर रहा है। वायु प्राण का जब अग्नि से मिलान होता है तो एक ध्वनि उत्पन्न होती है उस ध्वनि का उदघोष कहलाता है उदगाता जब अपने में उदघोष करने लगता है तो उदगाता की आयु में दीर्घता आ जाती है, मनस्तव आ जाता है पवित्रता आ जाती है उसका अभ्योदय होता रहता है।

हे प्रभु! मुझे तुम किस काल में अपनाओगे? एक माता का पुत्र क्षुधा से पीड़ित होता है, माता उसे अपने हृदय से आलिंगन करके लोरियों का पान कराके उसकी क्षुधा को दूरी कर देती है। इसी प्रकार वह भक्त कहता है, वह यथार्थी कहता है, सत्यवादी कहता है कि हे प्रभु! मुझे किस काल में तुम अपनी गोद में लोगे? मैं तुम्हारे द्वार पर आना चाहता हूँ। हे प्रभु! तुम कैसे हो? तुम न्यायकारी हो, तुम दयालु हो, तुम कृपालु हो, तुम संसार को धारण कर रहे हो। जैसे माता अपने गर्भस्थल में शिशु को धारण कर लेती है जैसे यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों को धारण करने वाली है, ऐसे प्रभु! आप भी इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड को धारण कर रहे हैं। जब मैं वेद का मन्त्र कहता हूँ तो मुझे आप ही आप दृष्टिपात आते हो। जब मैं प्राची में जाता हूँ तो मुझे तुम अग्नि के रूप में दृष्टिपात आते हो। जब मैं दक्षिण दिशा में जाता हूँ तो वहाँ तुम मुझे इन्द्र के रूप में दृष्टिपात आते हो और जब मैं पश्चिम दिशा में जाता हूँ तो वहाँ तुम मुझे अन्नाद वीर्यत्व के रूप में दृष्टिपात आने लगते हो। जब मैं उदीची में जाता हूँ तो तुम सोम बन करके हमें अमृत प्रदान कर रहे हो। जब मैं ध्रुवा में जाता हूँ तो वहाँ तुम विष्णु बन करके पालन कर रहे हो

और जब मैं ऊर्ध्वा में जाता हूँ तो आचार्य बन करके हमारे जीवन का उत्थान कर रहे हो।
आचार्य वेद मन्त्र को ले करके बहुत ऊँची उड़ान उड़ने लगता है। वेद मन्त्र कहता है, वेद का आचार्य कहता है, चिन्तन करता हुआ कि हे प्रभु! तू माता बन करके, इस संसार को धारण कर रही है, कैसे धारण कर रही है? जैसे मानव को, शिशु को, माता अपने गर्भ में धारण कर रही है। इसी प्रकार ये नाना प्रकार के जो लोक लोकान्तर हमें दृष्टिपात आ रहे है, इस संसार को तू धारण कर रही है। जैसे यह पृथ्वी नाना प्रकार के खनिजों की उत्पति कर रही है, खनिजों को धारण कर रही है। इसी प्रकार इस पृथ्वी को आप धारण कर रहीं हैं हे माता! ये नाना पृथ्वियाँ तेरे ही गर्भस्थल में ओत प्रोत हो रही है। जब विचारा जाता है, कि तुझे वेद सु के रूप में परिणत कर रहा है, कहीं तुझे माता वसुन्धरा के रूप में परिणित कर रहा है वेद कहता है कि तू वसुन्धरा है। तू सबको धारण करने वाली है नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों को धारण करने वाली है जब वैज्ञानिक तेरे गर्भ में परिणत हो जाते हैं। जब तेरे से उदबुद्ध होने वाली तरंगो से तरंगित होने वाले आचार्य जन उन तरंगों के ऊपर अनुसन्धान करते हैं तो उन तरंगों में से, एक एक तरंगे, किस किस लोक से कैसे कैसे उनका समन्वय होता है, उसके ऊपर अनुसन्धान करते हैं, ऋषियों ने एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके उस माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में जब विचार करने लगे तो विचार आया कि यह कैसा अनुपम जगत है। हे प्रभु! हे देव! तू सृष्टि का नियन्ता है, सृष्टि का निर्माण करने वाला है, सृष्टि को महान बनाता है, अपने को ऊँचा बनाने के लिए हम तेरे गर्भ में आना चाहते हैं।
हे प्रभु! यह मानव समाज गुड़म्बावादी बन गया है। अशुद्ध प्रेरणा उत्पन्न होते ही एक नवीनता का क्रूत उत्पन्न हो जाता है। और नाना सम्प्रदायों के जन्म हो जाते है। इन्हीं जन्मों के कारण मानव अपने में दूषित होता हुआ, अपने को अनुभव करता है क्या यह संसार तो इसी प्रकार गति करता रहेगा। परन्तु मानव का कर्तव्य है कि हम अपने जीवन को एक महान धारा पर ले जाए क्योंकि यह संसार तो शमशान भूमि भी बनती रहती है पुष्पांजलियों का केन्द्र भी बन सकता है। यह

तो प्रभु की अनुपमता है।

हे प्रभु! मुझे यहाँ से दूरी कर दो। ऐसी प्रार्थना करता रहता है। क्योंकि आत्मा तो सदैव अपने प्रभु की प्रार्थना करता ही रहता है।

हमें प्रभु के राष्ट्र में जाना है। प्रभु के राष्ट्र में पंहुचना है प्रभु के राष्ट्र में जाने वाले प्राणी, अपने में सुखद अनुभव करते हैं।

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जायें। यह न सूर्य है न चन्द्रमा है न तारामण्डल है, न अग्नि है, न शब्द है। भगवन! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को आत्मा को जानना चाहिए। आत्मवेत्ता बनने के लिए, आत्मचेतना में ही रत्त रहना चाहिए। क्योंकि जो हमारे शरीरों में भास रहा है, प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाशक को जानने के, प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिए।

यह कैसा अदभुत जगत है, इसके ऊपर विचारना है बहुत गम्भीरता से मनन करना है। क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है, प्रभु की जो रचना है वह बड़ी अदभुत है। इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है। हे प्रभु! हे देवत्व! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब मैं तेरे विज्ञान की चर्चा करने लगता हूँ, अपने में मनन करने लगता हूँ तो कोई मार्ग ऐसा प्राप्त नहीं होता कि मैं अपने में स्वतन्त्र हो करके भ्रमण कर सकू। हे प्रभु! तेरा यह कैसा अनुपम जगत है, यह मानव का हृदय है। यह हृदय से हृदय का मिलान करना चाहता है। यह संसार जितना दृष्टिपात आ रहा है, यह सब परमपिता परमात्मा का हृदय है। और मानव का हृदय, आत्मीय हृदय यह उसका मिलान करना चाहता है। जब परमात्मा के हृदय और मानव के हृदय का जब तक समन्वय नहीं होता, तब तक परमात्मा का आनन्दमयी दर्शन नहीं हुआ करता है। तो वह अगम्य बन जाता है, वह दर्शन उद्गीत गाने के सुयोग्य नहीं होता, वह केवल अथाह आनन्द की प्रतिभा कहलाती है। आनन्दमयी प्रभु का आनन्द लेता रहता है, इस संसार से उसका उपराम हो जाता है।

हम उस परमपिता परमात्मा की प्रसन्नता में सदैव प्रसन्न रहना चाहते हैं। हे प्रभु! तेरा आनन्दमयी स्वरूप है। यह जो अमृतमयी जगत बह रहा है, जिस अमृतमयी जगत को हम प्रायः अपने में धारण करना चाहते हैं और यह जो आनन्दमयी, यज्ञोमयी स्वरूपता है हम उसे अपने हृदय में धारण करना चाहते हैं। प्रभु! तेरा यह अनूठा अनुपम जगत है जिसके ऊपर मानव सदैव तेरी महिमा का गुण गाता रहा है। एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके ऋषि मुनि तेरे गुणों का वर्णन करते रहे हैं। तेरे यज्ञोमयी स्वरूपों का वर्णन होता रहता हैं। वह परमपिता परमात्मा जो इस ब्रह्माण्ड के कण कण में व्याप्त है अथवा कण कण में उसी की महिमा का गुणगान गा रहा है और वह उसकी महती का वर्णन कर रहा है।

हे प्रभु! यह आपकी अनुपम कृपा है, आपकी प्रेरणा से, आप प्रेरणा नही देते, तो मैं प्रेरित नही हो सकता था और जब मैं प्रेरित नही हो सकता, तो मुझे यह अन्धकार व्यापता रहता। मेरे जीवन में प्रकाश आना असम्भव था प्रभु!।

हे प्रभु! आप स्वतः अपने में प्रकाशवान है, प्रकाशमयी कहलाते है। उसमें से हम अपने प्रकाश को ग्रहण कर लेते है।

तो प्रभु! इसी प्रकार हमारा यह जो मन है, प्राण है, आत्मा है, हे प्रभु! आत्मा का मिलान आप से हो जाना चाहिए। तो यह प्रभु! की वृत्तियों में रत्त होने के लिए अपने में प्रेरित होता हुआ, अपनी आभा को प्राप्त करता रहता है। क्योंकि संसार में प्रत्येक मानव अन्धकार को अपने से दूर करना चाहता है।

हे प्रभु! तू कैसा ब्रह्मवेत्ता है। तू कैसा ब्रह्मज्ञानी है। तेरा यह जो संसार रूपी ब्रह्माण्ड यह हमें दृष्टिपात आ रहा है यह अपने में रत्त होता हुआ, तेरे गुणों का बखान कर रहा है। तेरे गुणों का वर्णन कर रहा है। वाह रे प्रभु! तूने इस रथ का निर्माण किया है, तू कैसे रथ का निर्माण करने वाला है। प्रभु! तेरी महानता कितनी विचित्र है, भगवन! राजा भी उसी आभा में रत्त रहता है, मानव भी उसी आभा में रत्त रहता है। यह क्रियाकलाप प्रत्येक साधक के साथ एकोकीकरण करने वाला है।

हे प्रभु! तू कितना अनूठा है, कितना महान है, कितना पवित्र है। तेरे गुणों का गुणगान गाने के लिए हम असमर्थ हो जाते हैं। वह रजोगुण, जिसमें राजा पालन कर रहा है शासक रजोगुण से दण्डित कर रहा है और दण्ड देने में भी सतोगुण

विद्यमान रहता है।

हे प्रभु! मैं अपनी आत्मशान्ति के लिए, आपके द्वार पर आया हूँ। जिससे मेरा आत्मा शान्ति को प्राप्त हो जाये। वह प्रभु! कितना विज्ञानवेत्ता है। हे प्रभु! तेरी जो महानता है, वह बड़ी विचित्रतम है। एक ही पौधा है, उस पर दो प्रकार का अन्न है। एक को मानव पान करके यागी बन रहा है और उसी पौधे के दूसरे अन्न को पान करके पशु दुग्ध दे रहा है।

हे परमात्मन! तू महान और पवित्रता में परिणत रहने वाला है। हे परमात्मन! तेरे इस जगत में यह क्या हो रहा है। राजा अपनी क्रियाओं में अपने पदों की लोलुपता में सदैव तत्पर रहता है। भगवान राम कहता है, हे भरत! मैं राष्ट्र नहीं लेता हूँ, भरत कहता है मैं राष्ट्र को नहीं भोगना चाहता हूँ। परन्तु आज का प्राणी कहता है कि कितने प्राणी नष्ट हो जाए, परन्तु मेरा आधिपत्य होना चाहिए, मेरा शासन होना चाहिए, मेरे पद की लोलुपता होनी चाहिए।

हे परमात्मन! तेरा यह जो जगत है, तेरी जो इस प्रकार की यज्ञशाला है, जिसमें प्रत्येक मानव नाना प्रकार के अन्वेषण पर लगा हुआ है। ज्ञान और प्रयत्न में लगा हुआ है। जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है वहाँ आत्मा का प्रिय लक्षण, और आत्मा की प्रतिभा दृष्टिपात आती है। हे परमात्मन! तू इतना विज्ञानवेत्ता है कि तेरे विज्ञान की कोई सीमा नही हैं, मेरी भोली माता को ज्ञान नही हैं, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता हैं, कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, कहीं मन की धारा का वृत्त बन रहा है। कहीं हृदय की अगम्य ज्योतिमयी बन रही है, हृदय में एक आकांक्षा लगी हुई है, मैं प्रकाश में चला जाऊँ, अन्धकार से मैं पृथक हो जाऊं अन्धकार मेरे समीप न रह पाये, मैं सदैव प्रकाश में जाना चाहता हूँ प्रभु!।

हे परमात्मन! जितना भी यह जड़ जगत और चेतन्य जगत है उसमें आप समाहित हो जाएं। हे परमात्मन! तू सर्वत्र इस ब्रह्माण्ड का निर्माण करने वाला है, और ब्रह्माण्ड में रमण करने वाला है।

हे प्रभु! तू महान है! हे प्रभु! हम तेरे राष्ट्र में है आप प्रेरणा के स्रोत है। आप अपनी प्रेरणा देते रहते है, हम सुमार्ग की ओर चल देते हैं। हे प्रभु! तेरा कितना विशाल मण्डल है। हे प्रभु! मैं अभिमान करूं, तो किसके ऊपर अभिमान करूं, मैं किसके

ऊपर मग्न हो जाऊं? प्रभु! तेरा ब्रह्माण्ड कैसा है, स्मरण करते करते जन्म जन्मान्तर समाप्त हो जाते हैं। हे प्रभु! तेरा अनन्तमयी जगत है। आज मैं जगत को अच्छी प्रकार नही जान पाता, जन्म जन्मान्तर मेरे इसमें लग जाते हैं। एक समय अग्नि गोत्र में जन्म लेने वाले अंगिरस महाराज ने यह कहा था कि हे प्रभु! यदि मैं सृष्टि को विचारता रहूँ तो सहस्रों जन्म हो जायें और मैं इसके ऊपर विचार विनिमय करता रहूँ, तो हे प्रभु! मेरी आयु सूक्ष्म रहेगी, तेरा जगत इतना अनुपम है।

हे प्रभु! मुझे पार ले चल, मेरे जीवन में यह अज्ञान न बना रहे, मेरे जीवन में यह अन्धकार न बना रहे, मैं अन्धकार से प्रकाश में जाना चाहता हूँ। हे प्रभु! यदि प्रकाश मुझमे आ जाये, तो मुझे अभिमान न हो और यदि मेरे जीवन में अन्धकार आ जाये, तो मैं इतना भिन्न न हो जाऊं, जिससे मेरे जीवन की मृत्यु हो जाये, मैं अज्ञान में प्रवेश कर जाऊं। ऐसा मेरे जीवन में न हो। परन्तु मेरा जीवन ऐसा ज्ञान में हो कि जिससे अमावस्या को भी मैं पूर्णिमा में परिवर्तित कर सकू। पूर्णेष्टि को भी मैं निरभिमानी बना करके उसमें रत्त रहूँ। ऐसा प्रायः मेरा जीवन होना चाहिए।

हे प्रभु! तू हमारा देव है, तू हमारा कल्याण करने वाला है। तू कहीं शिव बन करके, हलाहल विष को पान करके, संसार को अमृत देता हैं, कहीं तू शिव बन करके सूर्य के रूप में प्रकाश दे रहा है। कहीं तू अपने में रत रह करके जीवन में प्रकाश दे रहा है। कहीं तू अपने में रत रह करके जीवन में प्रकाश की आभा में परिणत हो रहा है।

हे प्रभु! अनन्तमयी ज्योति के स्रोत तुझे वेद इन्द्र कहता है तू इन्द्र हैं। तू धीमी धीमी वृष्टि करने वाला है। नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाला है, जड़वत संसार तेरी आभा में जब रत रहने लगता है तो उसमें एक महान पवित्रता, महानता की उज्ज्वलता उसमें ओत प्रोत हो जाती है। तो हे प्रभु! हम तेरी शरण और तेरे आनन्दमयी उन लोरियों का पान करना चाहते हैं, जिससे हम सर्व रसों का पान करने वाला हों, जैसे वैद्यराज नाना प्रकार की औषधियों को जानने वाला अपने में रसों धर्मा बन जाता है, वह रसों को उपलब्ध करने लगता है। तेरे नाना प्रकार के व्यंजनों को जान करके इस संसार सागर की ऊर्ध्वा में एक कल्पना करने लगता है। मानव का जो बौद्धिक जीवन है वह पवित्र बन जाता हैं उसमें

तेज की प्रतिभा का जन्म हो जाता है। तो हे परमदेव! तू आनन्दमयी, तू सच्चिदानन्द आनन्दमयी कहलाता है। तू सतचित आनन्द हैं। हम आनन्द के लिए सदैव पिपासी रहते हैं। हे प्रभु! तू हमारे में महानता की प्रतिभा ओत प्रोत करा, जिससे प्रभु! हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। कोई संसार में मान की, तो कोई अपमान की प्रतिभा में रत हो रहा है। तो हे भगवन! हम आपको बारम्बार आपकी महिमा को दृष्टिपात करते हुए, तेरे अनन्तमयी ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हुए हमारा मस्तिष्क नतमस्तक हो रहा है। हम सदैव आपकी महिमा का ही गुणगान गाते रहें।

हम उस मार्ग के पथिक बनना चाहते हैं, जिस पथ पर ऋषि मुनि आज तक अपने याग में परिणत होते रहें है, योगाभ्यास करते हुए अपने प्राणत्व और मनस्तव को जान करके ऊर्ध्वा गति को प्राप्त कर रहे है। तो हे देव! हम उस महानता की पिपासा में सदैव संलग्न रहते हैं, और रहना चाहते है। जिससे प्रभु! आपका स्मरण हमारे एक एक अंग अंग में समाहित हो जाए। जैसे प्रातः काल सूर्य उदय हो करके नाना प्रकार की किरणों से इस संसार को आच्छादित कर देता हैं। पृथ्वी को आच्छादित कर देता है इसी प्रकार हे प्रभु! आपके नामोकरण से हमारा जीवन इतना परिपूर्ण हो जाये कि प्रभु! आपके नाम के स्मरण की तरंगें हमारे अंग अंग से उत्पन्न होने लगे, हमारा जीवन ऐसा महान, ऐसा कृतज्ञ होना चाहिए कि ऐसा निष्पाप होना चाहिए ऐसा निष्कपट होना चाहिए हे प्रभु! जो आपकी देन है वह जो आपकी सुगन्धि है, अंग अंग से उसका प्रसार हो जाए, हम सुगन्धि युक्त बन जाए। तो हे मेरे प्रभु! तेरा वेद तेरा ज्ञान अनुपम है, तू अनन्तमयी कहलाता हैं।

हे महामना! तू हमे देता रहता है और क्या देता है? संसार की प्रत्येक वस्तुओ का तू हममें भरण करता रहता हैं अथवा प्रदान करता रहता है तू देवों का भी देव हैं। तू देवत्व कहलाता गया है। तू कैसा अनन्तमयी देवता हैं? हमें देता ही रहता हैं, रात्रि समाप्त हो जाती हैं तो प्रातः काल में प्रकाश आ जाता हैं। प्रकाश का अस्त होता है तो रात्रि का काल आ जाता है उसमें भी हमें देता ही रहता हैं। रात्रि के काल में जब निद्रा की गोद में चले जाते हैं तो वह मेरा देव, शक्ति प्रदान करता रहता है प्रातः काल आया, शक्ति का संचार भरण हो गया। तो प्रातः सूर्य उदय

हो गया प्रकाश आ गया, देवता आ गया, आदित्य उदय हो गये, उषा काल आ गया, हमें उष्णता प्रदान कर रहे हैं, तो वह देता ही रहता है। क्या देता है वह? सर्वत्र एक ओजस्वी शक्ति हमें प्रदान करता हैं। ऐसी शक्ति को प्रदान करता है जो शक्ति हमें कहीं प्राप्त नही होती वह शक्ति हमे स्वतः प्रदान की जाती है। वह देव, देने वाला हैं। वह रात्रि रूप में भी विद्यमान रहता हैं और दिवस के रूप में भी प्रकाश देता रहता हैं। वह मन को प्रसन्न बनाता रहता हैं। इसीलिए हमें प्रभु की आराधना अथवा देव की महिमा का गुणगान सदैव गाना ही चाहिये। क्योंकि वह देव कहलाता हैं वह महादेव कहलाता हैं।

वह देवताओं का भी देवता, महादेव हैं जो हमारे अन्तर्हृदय में विद्यमान रहता है जो हमारी अन्तर्मुखी भावना में, परिणत रहने वाला हैं, तो उसे हम महादेव कहते हैं देवताओं का देव कहते हैं, हम प्रभु से ही शक्ति प्राप्त करते हैं वही हमारा न्यायाधीश कहलाता हैं। न्याय कौन करता है? राजा करता है, वह मानव का न्याय करता है परन्तु उन कर्मों का करता है जो क्रियाकलाप हमें दृष्टिपात आ गये हैं, जो शरीर के क्रियाकलाप है परन्तु वह जो मेरा देव हैं वह जो न्यायाधीश है जो मानव को न्याय प्रदान करने वाला हैं मानव एक अन्धकार की आभा में, अन्धकार के क्षेत्र में विद्यमान रहता हैं अन्धकार की प्रतिभा में रत रहता है परन्तु उस प्रभु का चिन्तन कर रहा है वही मन में अशुभ संस्कारों को जन्म दे रहा हैं तो वह जो अशुभ संस्कार उसके आन्तरिक जगत में हो रहा हैं राजा उसका न्याय नही कर सकता, उसका न्यायाधीश कौन है? वह मेरा प्यारा प्रभु हैं जो अन्तर्हृदय में नियमन कर रहा है जो उस क्रिया का आयतन कहलाता हैं, वही तो उसे न्याय देने वाला है परन्तु राजा स्थूल कर्मों का न्याय देता हैं, न्यायाधीश स्थूल कर्मों का न्याय देता हैं परन्तु जो आन्तरिक हमारा मन सदैव कर्म करता रहता हैं शुभ कर्म करता हैं अशुभ कर्म करता है नाना प्रकार की तरंगें जागरूक हो रही हैं उन तरंगों में हम रत रहते हैं तो उनका न्यायाधीश राजा नही बन सकता, उसका वह जो मेरा प्यारा प्रभु हैं सूक्ष्मतम जो मानव इस संसार को अपने में धारण कर रहा हैं जो संसार को अपना आयतन बना रहा है, वही तो न्यायधीश कहलाता हैं। तो न्याय करने वाला कौन है? वह प्रभु हैं। इसीलिए हमारे जितने क्रियाकलाप है, जितने

कर्म बन्धन है, उन सबको हमें प्रभु को अर्पित कर देना चाहिए। प्रभु के आश्रित बन करके हमें इस संसार में विचरण करना चाहिए। प्राणों की सत्ता में हम रत्त रहना चाहते हैं तो हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने मानवीय जीवन को ऊँचा बनाये। प्रभु की प्रतिभा में सदैव रत रहें, क्योंकि यही हमारा कर्तव्य है इसमें हम अपने प्रभु का यशोगान गा गा करके, अपने में शुद्ध वायुमण्डल का भरण कर रहे हैं अपना शोधन कर रहे हैं वही तो शोधन हमें महान और पवित्र बनाता हैं।

हे शिव! तू कल्याणकारी है। तू कल्याणमयी आनन्द को प्रदान करने वाला है इसीलिए उस महान देव को हमारे यहाँ शिव कहा गया है। हे शिव! आओ, तुम हमें अमृत की वृष्टि करो।

हे परमात्मन! तेरा जो वेदोमयी ज्ञान है तेरा जो वेदोमयी प्रकाश है वह अनुपम है। हे प्रभु! एक एक वेद का शब्द ज्ञान और विज्ञान से गुथा हुआ है। ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा से प्रतिभाषित हो रहा है।

हे अग्नये! तू गाहर्पथ्य ही नहीं, तू वैश्वानर नाम की अग्नि बन कर हमारा कल्याण करती है। तू विश्व को प्रकाशित करने वाली है, तू द्यौ में रमण करने वाली है और द्यौ से ऊर्जा, तेरे प्रकाश को ले करके सूर्य प्रकाशित हो जाता है। वह सूर्य प्रकाश देने वाला है। हमारे वैदिक साहित्य में सूर्य को भास्कर कहा है। वह भासता रहता है, मग्न रहता हैं वैदिक साहित्य में उसे आदित्य भी कहा है। जैसे ब्रह्मचारी आदित्य, ब्रह्म में रमण करता है इसी प्रकार वह द्यौ लोक में रमण करता हुआ वह प्रकाश देता रहता है। हे अग्नि! तू वैश्वानर नाम की अग्नि बन करके, हमें प्रकाश में ले चल और अन्धकार हमारे समीप न आये, क्योंकि यदि अन्धकार आ गया तो हमारे जीवन का जो अमूल्य रहस्य है वह समाप्त हो जायेगा तो आज हम उस परमपिता परमात्मा को अपना उपास्य देव स्वीकार करते हैं।

विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है जो हमारा रक्षक है और जो हमारी रक्षा कर रहा है, वह विष्णु कहलाता है। तो हे विष्णु! तू यज्ञोमयी हैं। तू, आ मेरे याग को शुद्ध और पवित्र बना, क्योंकि तू श्रेष्ठतम है।

हे अग्नि! तू मेरे संकल्प को पूर्ण कर, वह 'अग्न आयाहि' कह करके उसे पुकारता

रहता है उसको वह कहता है हे अग्नि! आ तू मेरे हृदय में समाहित हो वह ब्रह्माग्नि है वही उग्र अग्नि है और वही विष्णु वाचन अग्नि कहलाती है। वही अग्नि जब देवताओं के समीप जाती है तो देवताओं का मुख बन करके उनकी तृप्ति करती रहती है। वही अग्नि जब वैज्ञानिकों के समीप जाती है तो वही अग्नि नाना प्रकार के परमाणुओं को जागरूक करके, यन्त्रों का निर्माण करने लगती है।
हे अग्नि! तू देवताओं का मुख माना गया है, क्योंकि देवता तेरे से ही नाना प्रकार की सहायता को प्राप्त करते रहते है और तू सहायता देता रहता है। हे अग्नि! तू प्रकाश का पुञ्ज कहलाता है। तू प्राण सत्ता को देने वाला है, तू अग्नि का मुख कहलाया गया है, हम तेरे में ही नाना प्रकार के साकल्यों को प्रदान कर रहे है। वह साकल्य देता है विचारों की सुगन्धि हो रही है।
हे अग्नि! तू आ हमारे अन्तर्हृदय की अग्नि और बाह्य जगत की अग्नि दोनों का जब समन्वय हो जाता है। तो हमारा कल्याण हो जाता है।
हे ब्रह्म! मैं तेरी शरण में आया हूँ और जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ तुझे ही दृष्टिपात करता हूँ। प्राची दिक में, पूर्व में अग्नि का प्रावधान हो रहा है और दक्षिण में इन्द्र बन करके रहते हो और प्रतीची दिक् में वरूण बन करके रहते हो उदीची दिक् में सोम बन करके रहते हो ज्ञान के भण्डार हों, ध्रुवा में पालन करने वाले विष्णु हो और ऊर्ध्वा में पालन करने वाला बृहस्पति कहलाता हैं। वह प्रभु! की उपासना करता है प्रातः काल कहता है कि प्रभु पाप करने के लिए कहाँ जाऊं और मेरे द्वारा पाप क्यों हों? हे प्रभु! मुझे इतनी शक्ति प्रदान करो कि मैं पूर्व में अग्नि के तुल्य तेज को दृष्टिपात करता रहूँ, मैं दक्षिण में इन्द्र को दृष्टिपात करता रहूं। और अन्न का जो भण्डार है जो मानव को वृत्त बनाता हैं। हे प्रभु! प्रतीची में तुम वरूण बन करके रहते हो और वह वरूण ही मेरे जीवन की सार्थकता हैं इसी प्रकार उदीची में सोम बन करके रहते हो। सोम किसे कहते हैं? ज्ञान को सोम कहते हैं, विज्ञान को सोम कहते हैं विवेक को सोम कहते हैं वह धारण होने वाला सोम हैं योगीजन इसी सोम को पान करते हुए ज्ञान और विवेक से सने हुए अमृत को प्राप्त करते हैं। तो उनकी वाणी में सोमपन आ जाता है। प्रभु! आप ध्रुवा में पालन करने वाले विष्णु बन करके रहते हो, आप हम सबकी पालना करने वाले हों और

ऊर्जा में प्रभु! आप बृहस्पति बन करके मेरे जीवन के रक्षक बनते हो, क्योंकि रक्षा विद्या और विवेक से होती हैं ज्ञानी ही संसार में महान कहलाता हैं और उसका नेतृत्व करने वाला बृहस्पति कहलाता हैं।

हे प्रभु! पापाचार करने के लिए कहाँ जाऊं? आप तो मेरे रक्षक हैं और आप मुझे प्रेरित करते रहो कि मैं दूरिता में न जाऊं। प्रभु! मैं कालिमा को अपने से दूर करना चाहता हूँ, प्रभु! मैं सोम का पान करना चाहता हूँ, इस प्रकार जो मानव प्रभु को स्मरण करता है जो प्रातः काल ब्रह्म का चिन्तन करता है वह महान कहलाता हैं इसीलिए ब्रह्म का चिन्तन होना चाहिए और उसके पश्चात देव पूजा होनी चाहिए। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब तेरे विज्ञान की प्रतिभा में रत्त होता हूँ तो हे प्रभु! मेरे अन्तर्हृदय में अथवा मेरे आत्मतत्व में कोई वृत्तियां नहीं प्राप्त होंगी।

मैं परमात्मा को अपने समीप लाना चाहता हूँ अथवा मैं परमपिता परमात्मा के समीप जाना चाहता हूँ। यह जो मेरा आत्मा है यह जो आत्मतत्व है, आत्मा का आत्मा में वास हो जाए तो मेरा अन्तर्हृदय पवित्रता में परिणत हो जाए।

हे परमात्मन! तुझे वेद ने अग्नि स्वरूप कहा है, तू इस संसार को तपाने वाला है, क्योंकि यह जो जगत है, यह आपकी ही चेतना पान कर रहा है। आपका जो अग्निमय स्वरूप है, उसी प्रकाश में यह मानव प्रकाशमय होता चला जा रहा है। वेद ने तुझे मृत्युञ्जय कहा है जिसके निकट मृत्यु नहीं होती, वह संसार को मृत्यु से ऊर्ध्वा में ले जाने वाला है।

हे प्रभो! आपको अग्नि स्वरूप माना गया है क्योंकि अग्नि, आपकी अग्नि स्वरूप चेतना से बनी है। हे प्रभो! आप हमारे पापों का मोचन करने वाले हैं क्योंकि कर्मों के अनुसार जब हमें फल प्रदान कर देते हैं तो उससे हमारे जीवन में एक नवीनता का प्रसार होने लगता है। हे प्रभो! हमें प्रकाश, आप की महिमा से ही प्राप्त होता है। आपके प्रकाश को जब हम अपने में दृष्टिपात करते हैं तो उसका वर्णन नहीं कर पाते हैं, क्योंकि वह ऐसा अद्वितीय प्रकाश है जिसको पान करने के पश्चात मानव के जीवन में एक महत्ता दिखने लगती है।

हे प्रभो! हमारा आपसे जो बिछुड़ना हो गया था, हम उसकी पुनः सन्धि चाहते

हैं। यह सन्धि तभी हो सकेगी, जब आपकी हमारे ऊपर अनुपम कृपा होगी और हम उस सन्धि करने वाले पथ के पथिक बनेंगे। हे प्रभु! हम आलस्य और प्रमाद को दूर करके उस पथ को अपनाना चाहते हैं जिसके अपनाने से आपकी और हमारी सन्धि हो जाए। हम लाखों, करोड़ों वर्षों से अथवा अरबों वर्षों से, न मालूम कितना समय हो गया, जब आपसे हमारा विच्छेद हो गया था। हम पुनः से सन्धि चाहते हैं और उस वैदिक प्रकाश को अपनाना चाहते हैं, जिस प्रकाश में आपकी और हमारी सन्धि होगी। वह पथ प्रकाशमय कहलाया गया है। हम उस पथ को वास्तव में अपनाना चाहते हैं।

हे भगवन! यह संसार तो विडम्बित होता चला जा रहा है। यहाँ नाना प्रकार के विवाद होते रहते हैं। हम तो आपके समीप आए हैं आपको अपनाना चाहते हैं और आपकी दया चाहते हैं।

हे प्रभु! तू मेरे हृदय को उज्ज्वल और महान बना। उस पवित्र पथ का गामी बना, जिस पथ पर चलने के पश्चात मानव की गति महानता में परिणत हो जाती है। हे प्रभु! जो मेरी चंचल गति है वह गति ऐसे दमनत्व को प्राप्त होती चली जाये, जैसे सायंकाल का सूर्य हो जाता है। वह गति मेरे लिए घातक है। मेरे जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने वाली है। हे प्रभु! मेरे इस जीवन में नाना प्रकार की बाधाएं हैं, परन्तु वह जो सुपथ है, उस पथ पर चलने के लिए, प्रभु! मेरे लिए कंचन एक बहुत ही बाधक बना हुआ है। वह जो कंचन है वह मेरी ममतामयी धारा को बना रहा है। जिससे प्रभु! मेरा जीवन विकसित नहीं हो पाता। क्योंकि तेरे राष्ट्र में कंचन नहीं होता, तेरे राष्ट्र में प्रकाश होता है। हे प्रभु! यह जो संसार का लुभावना जगत है जिसमें नाना प्रकार के सुन्दर रूप और कंचन मुझे ऐसे लुभाते रहते हैं, जैसे प्रभु! प्रातःकाल में मानव अपनी शैय्या को त्याग देता है। हे प्रभु! उसे मैं नहीं चाहता। प्रभु! मैं सदैव यह चाहता रहता हूँ कि मेरे हृदय से कंचन और कामिनी दोनों से मैं उदासीन हो जाऊं। प्रभु! जब तक मैं दोनों से उदासीन नहीं हो सकूँगा, तब तक मेरा जीवन उत्तम पथ को प्राप्त नहीं होगा। मुझे स्मरण आता रहता है क्योंकि हमारे सत्संग की जो पुनीत बेला है वास्तव में उसमें हमें यही वस्तु तो प्राप्त होती रहती है। क्योंकि जब हम विचारते रहते हैं कि संसार में जो वस्तु मानव को

उदासीन नहीं होने देती, इस संसार में हमारा जातीय जो अभिमान है वह भी हमारे जीवन में एक महान बाधक बना हुआ है।
हे प्रभु! संसार में, जब हम प्राणी मात्र में आपकी प्रतिभा को दृष्टिपात करेंगे तो हमारा जीवन और हम इस संसार से वास्तव में उदासीन बन सकते हैं। जब तक हमारा जीवन इन तीनों विचारों में भ्रमण कर रहा है, जातीय अभिमान है, कंचन अभिमान है, कामिनी अभिमान है, तो ये तीनों ही हमारे जीवन को नष्ट भ्रष्ट करते चले जा रहे हैं। हे प्रभु! मैं इसको नहीं चाहता। प्रभु! मैं उस मार्ग को चाहता हूँ, जिस पथ पर जाने के पश्चात इस मार्ग की एक उज्ज्वल धारा हमारे मानवत्व को पवित्र बनाती चली जाती है। तो भगवन! मैं प्रातःकाल की बेला में आपके चरणों की वंदना कर रहा हूँ, वंदना का अभिप्राय है कि मैं अपने हृदय को उज्ज्वल बना रहा हूँ, आपकी शुद्ध, पवित्र अमृत संवेदना के साथ प्रभु! मैं अपने हृदय को निर्मल और स्वच्छ जल से स्वच्छ बनाना चाहता हूँ। हे अग्नि! तू देवताओं का मुख है और तू देवताओं का मुख हो करके, तुझे मेरी भावनाओं को विचारना है।
हे वेदवाणी! तू कल्याण करने वाली है। तू वह वेदवाणी है जो सृष्टि के प्रारम्भ से संसार के कल्याणार्थ आयी है। हे वाणी! तेरा जो अनुकरण करते हैं उनका वास्तव में कल्याण होता है। तू वह वाणी है, जो सूर्य और चन्द्रमा को प्राप्त हुई है। हे वाणी तू वह वाणी है जिसने यह संसार रचाया है। तू बड़ी उदार व पवित्र है। संसार में जो तेरा अनुकरण करते हैं वे बड़े ऊंचे और पवित्र बन जाते हैं, वही उदार होते हैं।
हे परमात्मन! मैं यह नहीं जान पा रहा हूँ कि मैं उदार कैसे बन सकता हूँ? मेरी उदारता कहाँ है? आज मैं उदारता को पुकारता चला जा रहा हूँ। हे परमदेव! वह उदारता कौन से पदार्थ में है? वह उदारता तेरे गुणगान में है, या अपने मानव जीवन को बनाने में है। उदारता तो ऋषि मुनियों के सत्संग से प्राप्त होगी। हे प्रभु! तू उदार बनाने वाला है, यह मुझे निश्चय हो चुका है। प्रभु! आप उदारों के उदार हैं। यह संसार आपने रचा है। नित्यप्रति इसको चला रहे हैं। मानव आपको स्वीकार करे या न करे, परन्तु आप अपने कर्तव्य को नहीं त्यागते। आपकी

उदारता का आज संसार में कोई प्रमाण नहीं। आज हम तेरे रचाये हुए पदार्थ को अशुद्ध बनाते रहते हैं। परन्तु प्रभु! तुम इतने उदार और पवित्र हो कि प्रातःकाल में उसी पदार्थ को शुद्ध और पवित्र दे देते हो। प्रातःकाल में मानव को जीवन दे देते हो। रात्रि में निद्रा अवस्था में उसे आनन्द देते हो। उस प्रभु को कोई माने या न माने परन्तु वह प्रभु अपनी उदारता में सूक्ष्मता नहीं करता। उसकी उदारता इतनी पवित्र है कि कोई नास्तिक हो, आस्तिक हो परमात्मा की सृष्टि पर विचार करता हो न करता हो, परन्तु वह अपनी उदारता में सूक्ष्मता नहीं करते।

प्रत्येक मानव के हृदय में दर्शन की बड़ी पिपासी रहती है क्या मैं प्रभु का दर्शन कर रहा हूँ, मैं प्रभु के दर्शन करना चाहता हूँ। प्रभु दर्शन तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का वाक् कहता है, दर्शनं ब्रह्मा दर्शनं देवत्वं विष्णु दर्शनं ममं ब्रह्मे लोकाम मानो देखो, दर्शन उसको कहते हैं, जो मेरे प्यारे! देखो, मानव समाधिष्ट हो जाता है, जिस प्रवृत्ति में मानव समाधिष्ट हो जाएं, और उसके उपरामता में परिणत हो जाएं, उसका नाम दर्शन कहा जाता है, और विवेचना हो सकती है, एक मानो दर्शनों की विवेचना है, क्या यह जो प्रभु का रचाया हुआ अनुपम जगत है मानो देखो, इस जगत में जब प्रभु एक चेतना का भान करता है, एक चेतना का अनुभव करता है, तो मुनिवरों! देखो, वह भी दर्शन कहलाता है मानो देखो, इसके ऊपर और भी विवेचना की जाती है, मानो जब मानव समाधिष्ट होता है, देखो, योग में परिणत होता हुआ, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण को त्याग करके, जब मानव देखो, एक ही रस हो करके वह मानो देखो, रहस्यमयी जीवन बना हुआ है वह भी बेटा! एक दर्शन कहलाता है। मैं भी दर्शन कर रहा हूँ, मेरे प्यारे! देखो, इसका और भी, इसकी विवेचना की जाती है, क्या मानो देखो, एक कण से ले करके और पर्वतों तक, हिमालय तक मानो देखो, जो भान कर रहा है इसमें मानो देखो, पिण्ड के रूप में भी प्रभु है, और जो गतिवान है, वह उसमें भी प्रभु है, तो मानो देखो, जिस प्रकार दोनों का समन्वय हो जाता है, प्रभु और यह ब्रह्माण्ड जब एक सूत्र में पिरोये जाते हैं। तो देखो, वह भी हमारे यहाँ चैतन्यं ब्रह्मा कृतं लोकां मेरे प्यारे! देखो, एक उसकी विवेचना यह भी की जा सकती है, क्या मैं दर्शन कर रहा हूँ, मैं पिण्ड में भी दर्शन कर रहा हूँ, इस पिण्ड में देखो, मैं एक पिण्ड में मानो देखो,

आपो का दर्शन कर रहा हूँ, यह अग्नि का दर्शन कर रहा हूँ, मैं गुरुतव का दर्शन कर रहा हूँ, और गुरुत्व में मानो जो प्रतिक्रियाओं को देने वाला है, वह परिमपिता परमात्मा है। तो मैं उसका दर्शन कर रहा हूँ। तो बेटा! दर्शन की बड़ी विवेचनाएं हैं दर्शनों का बड़ा एक विचित्र स्वरूप माना गया है। प्रत्येक मानव यह कहता है, कि मैं अपने में ही अपनेपन का दर्शन कर रहा हूँ, मानो देखो, वह भी दर्शन है अपनेपन का दर्शन कैसे किया जाता है। बेटा! मानो देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान है वह एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके वह अपने में दर्शन कर रहा है मानो देखो, कहीं सूचना केन्द्र बना हुआ है, कहीं आज्ञा चक्र बना हुआ है, मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रियों में अपना अपना स्वरूप दृष्टिपात आता रहता है, प्रत्येक इन्द्रियों का जो स्वरूप है, वह ज्ञानेन्द्रियों में प्रवेश हो करके, और ज्ञान रूपी जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है। जब उसको उसमें परिणत करता है तो ज्ञान रूपी जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसमें जो प्रत्येक इन्द्रियों का विषय साकल्य बन करके देखो, हमें प्राप्त हो रहा है। तो वह भी मानो देखो, साकल्य के रूप में वह साकल्य जब आत्म चेतना में रत्त हो जाता है, तो मानो देखो, यह भी एक प्रकार की देखो, विवेचना मानी गई है। ये विवेचना क्या है, मैं दर्शन कर रहा हूँ, अपनेपन का, अपने में ही दर्शन हो रहा है अपनेपन का दर्शन ही ब्रह्माण्ड में हो रहा है, तो मानो देखो, बेटा! हम प्रभु की जहाँ विवेचना में जाते हैं प्रभु के जहाँ ब्रह्माण्ड में प्रवेश करते हैं, तो बड़ा एक विचित्र ये जगत हमें दृष्टिपात आने लगता है। बेटा! मैं आज बड़े गम्भीर समुद्र में चला गया हूँ, विचार केवल यही आ रहा है कि प्रत्येक वस्तु एक रहस्यमयी में बनी हुई है। बेटा! मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ, तुम किसी भी रूप में इसका दर्शन करो, परन्तु वह रहस्यमयी अर्थ में देखो, वह मौन हो जाता है, शान्त हो जाता है, उस शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके अपने में अपनेपन में मानो देखो, प्रभु का दर्शन अपनी आभा में आभा का दर्शन देखो, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण में भी अपना ही दर्शन कर रहा है। तो बेटा! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, एक वाक मुझे स्मरण आ रहा है, मेरे प्यारे! सतोयुग का एक काल था, सतोयुग के काल में बेटा! एक ऋषि हुए हैं जिन ऋषि का नाम प्रातुक ऋषि कहलाते थे, वह प्रातुक ऋषि महाराज एक समय वेदों का अध्ययन कर रहे

थे, तो प्रातुक ऋषि महाराज वेदों का अध्ययन करते करते उसके मन में यह आया कि मैं क्या अपने में अपनेपन का दर्शन करूं, तो जब दर्शन करने की पिपासा जागरूक हुई, तो मानो देखो, उन्होंने यह विचारा कि मैं ऊर्ध्वा से दर्शन करूं या ध्रुवा से, दर्शन करूं, मानो देखो, ध्रुवा में तो माता पिता अपने में दर्शन करते हैं, अपने में संकल्प करके देखो, वीरतव अपने में सूक्ष्म रूप में जब देखो, एक अपना ही दर्शन करते रहते हैं। वह अपना ही दर्शन होता रहता है परन्तु देखो, जब पुत्र पुत्रियों का जन्म होता है तो उसमें भी अपनेपन का ही दर्शन होता रहता है मेरे प्यारे! देखो, यह तो ध्रुवा हुआ, यह तो ध्रुवा में पिपासी चला गया है, पिपासी ध्रुवा में चला गया परन्तु जब प्रातुक महाराज ने अपने में अपनेपन के लिए मानो देखो, वेद का अध्ययन करता, वह अध्ययन करता हुआ उन्होंने विचारा कि सतोगुण में ही अपने में ही दर्शन हो रहा है, और रजोगुण भी अपने में ही दर्शन हो रहा है और तमोगुण का दर्शन भी अपने में हैं। मानो देखो, वह कैसे दर्शन हो रहा है मेरे प्यारे! एक मानव सत्य उच्चारण कर रहा है, वह प्रसन्न हो रहा है परन्तु यदि उसमें इस संसार में, दूसरा प्राणी मानो उसमें अपवाद में लगा हुआ है, परन्तु वह जो उसे सत्य का भान हो रहा है, वह जो सतोगुणी भान हो रहा है, उससे वह प्रसन्न है, और अपने में अपनेपन का दर्शन कर रहा है, न्यायधीश है, मानो देखो, न्याय कर रहा है, अपने आत्म तत्त्व को ले करके न्याय कर रहा है, न्याय मानो देखो, रजोगुणी एक शब्द में देखो, न्याय विद्यमान रहता है, न्याय कर रहा है, न्याय में देखो, अपनी आत्मा के अनूकुल अपने मनों में न्याय कर रहा है। एक मानो देखो, किसी प्रकार अशोभनीय कर्म करता हुआ, उसका वह पश्चाताप कर रहा है, और वह अपने में जब पश्चाताप करता है तो वह कहता है प्रभु से मैं ऐसा क्रियाकलाप पुनः नही कर पाऊंगा। हे प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए मानो देखो, वह प्रभु का दर्शन, और अपनी मानवीय जो चेतना है, जो पश्चाताप में लगी हुई है, दोंनो का जब समन्वय हो जाता है, तो मानो देखो, उसमें एक विचित्रता आ जाती है।

वह अपने में अपनेपन का दर्शन हो रहा है, तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने दर्शन किया दर्शन करके उसके पश्चात रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण अपना दर्शन किया,

और उसके पश्चात उस संसार को त्याग करके दर्शन करता हुआ, अपने में मानो देखो, प्रभु का दर्शन, क्योंकि हमारे में इस मानव शरीर में ही, एक मानवीय दर्शनों में एक वाक आया है सम्भवा ब्रह्मणे लोकां वाचन्नं ब्रीहि व्रताः वेद का वाक कहता है कि जब वह दर्शन करने के लिए आगे चला, उन्होंने गति की, तो मानो देखो, प्रभु एक एक कण कण में जो व्याप्त है, एक एक शरीर के कण कण में आत्म चेतना जो व्याप्त है दोनों के स्वरूप का मुनिवरों! देखो, जैसे हृदय और हृदय से अमृतं मेरे प्यारे! देखो, हृदय में हृदय का दर्शन होता रहता है, ऐसे ही प्रभु का जगत देखो, यह जगत बाह्य जगत प्रभु का हृदय है, और मानव का आन्तरिक जो हृदय है, जिसमें इन्द्रियाँ समावेश हो जाती है, जब दोनों हृदय एक सूत्र में सूत्रित हो जाते हैं, हृदय से हृदय में मिलान तो प्रभु! का दर्शन तो मानो देखो, स्वतः हो रहा है। आत्म तत्त्व में प्रभु का दर्शन हो रहा है। और वह प्रभु को अपने में दृष्टिपात कर रहा है। अपने में ही मानो देखो, अपनेपन का भान हो रहा है, क्योंकि प्रभु! दिव्यता में रहने वाले हैं। तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देखो, विचार देने नही आया हूँ, केवल देखो, संक्षिप्त परिचय देखो, यह परिचय है, संक्षिप्त परिचय है, विचार तो इसके ऊपर हम कल ही प्रगट करेंगें, आज का विचार तो केवल यह है, कि हमारा जो जीवन है, मानो देखो, उस प्रभु का जो दर्शन है, यह दर्शन होता रहता है जो मानो इस प्रकृतिवाद से ऊर्ध्वा में गति करता है, उसे मानो प्रभु का दर्शन होता है, परन्तु वह दर्शन को यह कहे कि दर्शन कैसा है, कितने आकार वाला है, वह सब रहस्य में बना हुआ है, वह सर्वत्र एक रहस्य में बना हुआ है, तो आज मैं बेटा! विशेष चर्चा न देता हुआ तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ, क्या प्रभु की महिमा को जानते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करो मानो देखो, प्रभु हमें अग्रणीय है। प्रभु एक महानता में लगा हुआ है, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने में अपनेपन का भान करते हुए और आभा में रत्त होते हुए बेटा! इस सागर से मानव प्रयास करता रहा है, और प्रयास करता हुआ अपनी प्रतिभा में रत्त होता है मुनिवरों! देखो, प्रभु अमृतं अमृतां वेदाः अमृतं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः यह है, कि हम परमपिता परमात्मा की महती को अपने

में धारण करते हुए अपने में लाते हुए मुनिवरों! देखो, यह आज का विचार यह समाप्त की हम प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, प्रभु जड़वत में और चैतन्यवत में दोनो में ही मानो देखो, वह विद्यमान है, जो साधक बनना चाहता है, प्रभु के समीप या अपनेपन में जाना चाहता है, तो इस मानो जड़वत को और चेतनावत को दोनों को जानना होगा एक मानव यह कहे कि मैं चेतना को जानना चाहता हूँ। मानो जड़तव को मैं जानना नही चाहता हूँ। तो वह नेत्रों से हीन बन जाता है, ज्ञान के नेत्रों से हीन बन जायेगा। इसीलिए संसार में जिस वस्तु को जानों उसको क्रिया में लाने का प्रयास करो, और जो क्रिया में लाता है, मानो देखो, वही तो उसको जान करके अपनेपन की प्रतिभा में रत्त हो जाता है तो यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या प्रत्येक मानव और प्रत्येक देवतव को प्रत्येक मानव देखो, अपनी आभा में रत्त होते हुए जड़ और चेतन को दोनों को जानना होगा, और यदि जड़ को नही जानोगे, चेतना को जानोगे, तो मानो देखो, तुम नेत्रों से हीन बन जाओगे। इसीलिए क्रियात्मक जीवन को बनाना और ब्रह्मचर्य को अपने में धारण करना ब्रह्मचर्य कहते हैं, जो मानो एक एक श्वास को ब्रह्म में पिरोने वाला हो, वही ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वा गति बनाता है। वही ब्रह्म में मानो देखो, दर्शनों में रत्त हो जाता है।

हे आनन्दमय! सुन्दर बनाने वाले! तू हमारे जीवन को उद्बुद्ध करने वाला है। जब हम तेरी प्रतिभा पर विचार विनिमय करने लगते हैं तो हमारा जीवन सुन्दर होने लगता है।

हे परमात्मन! तु अनुपम है, तू संसार को चेतना प्रदान करने वाला है। हम उस चेतना को चाहते हैं, जिसमें मानव को अन्धकार प्राप्त नहीं होता, सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। जब मानव ब्रह्म-सुख में परिणित होकर, ब्रह्म चेतना में रमण करने लगता है और सर्वत्र ब्रह्म ही को दृष्टिपात करने लगता है, तो वह संसार में उज्ज्वलता को प्राप्त होता हुआ, महान मण्डल में परिणित हो जाता है। वहाँ अन्धकार नहीं होता, सूर्य एक रस रहता है। हम आपकी आराधना करते हुए मानव से देवता, देवत्व से महादेवत्व चाहते हैं। हम अपने हृदय में प्रसन्नता, महत्ता और

उज्ज्वलता चाहते हैं, जिससे हमारा जीवन आनन्द में परिणित होता हुआ तथा महत्ता की वेदी पर रमण करता हुआ, संसार सागर से पार हो जाए।
हे प्रभो! हमारा आपसे जो बिछुड़न हो गया था, हम उसकी पुनः सन्धि चाहते हैं। यह सन्धि तभी हो सकेगी, जब आपकी हमारे ऊपर अनुपम कृपा होगी और हम उस सन्धि करने वाले पथ के पथिक बनेंगे। हम आलस्य और प्रमाद को दूर करके, उस पथ को अपनाना चाहते हैं, जिसके अपनाने से हमारी और आपकी सन्धि हो जाए। हम लाखों, करोड़ों अथवा अरबों वर्षों से न मालूम कितना समय हो गया? जब आपसे हमारा विच्छेद हो गया था। हम पुनः से सन्धि चाहते हैं और उस वैदिक प्रकाश को अपनाना चाहते हैं, जिस प्रकाश में हमारी और आपकी सन्धि होगी। वह पथ प्रकाशमय कहलाया गया है, हम उस पथ को वास्तव में अपनाना चाहते हैं। हे भगवन! यह संसार तो विडम्बित होता चला जा रहा है। यहाँ नाना प्रकार के विवाद होते रहते हैं। हम तो आपके समीप आकर, आपकी दया चाहते हैं। हे प्रभो! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उबुद्ध करने वाला है। तेरी महत्ता में हम हमेशा रमण करना चाहते हैं। अज्ञान हमें आपसे दूर ले जाता है। हम चाहते हैं कि सदैव, आपके प्रकाश व आनन्द में रमण करते रहें। मानव, आनन्द के लिए तथा जीवन की प्रतिभा को जानने के लिए उत्पन्न होता है। हमें सामर्थ्य प्रदान करो, जिससे हम आपकी महती अनुपम कृपा के द्वारा, आपकी महिमा को जानते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं।
वह यज्ञशाला में विद्यमान होकर के वो यजन कर रहा है। वे परमपिता परमात्मा की सृष्टि को निहार रहा है, देवतव को प्राप्त कर रहा है। हे ममतव को धारण करने वाले! तू अभ्योदय होकर के परमात्मा की अनुपम महती को जानकर के तू इस सागर से पार हो जा।
आओ, मेरे भद्र आचार्य जनों! मैं अभी अभी एक सुन्दर से अपने विचार प्रगट करा रहा था, कि हम परमात्मा की सुन्दर यज्ञवेदी को जानें, परमात्मा ने कितनी सुन्दर यज्ञवेदी रचाई हैं, इस यज्ञवेदी पर हम आ पंहुचे हैं, आज जो भी यज्ञ करता है, अन्न को पान करता है, परमात्मा की यज्ञवेदी और परमात्मा की दी हुई, सामग्री कहलाती हैं। उस परमपिता परमात्मा की सामग्री को, हम पान करते हैं,

तेजस्वी बनते हैं, देखो, वीर्यधारी बनते हैं, संघात बनते हैं, परन्तु जिससे हमारे जीवन में एक जो महान कृति हैं, वह जाग्रत होती चली जाएं प्रभु! ऐसी अनुपम कृपा करो। हे देव! हे सखा! हे सच्चिदानन्द! हे सर्वाधार! हे सर्वशक्तिमान! हे सर्वान्तर्यामी प्रभु! आप हमारा कल्याण कीजिए, हम कल्याण चाहते हैं, हे अग्ने! तू वास्तव में हमें प्रकाश देने वाली है, हमें प्रकाश दे, हमें वेद रूपी प्रकाश में ले चल, जहाँ हम यज्ञमान होता जन, बन करके हम और उससे भी आगे सूक्ष्म व्याहृतियों को जानते चले जाएं।

हे प्रभु! तेरा ये ब्रह्माण्ड कैसा अनुपम है। हे प्रभु! तेरा ब्रह्माण्ड कैसा अद्वितीय कहलाता है, यह इसके ऊपर मानव परम्परागतों से मानव अनुसन्धान करता रहा है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके अन्वेषण होता रहा है, अनुसन्धान होता रहा है परन्तु अनन्तमयी दृष्टिपात आता है।

हे प्रभु! तुम कैसे हो? तुम न्यायकारी हो, तुम दयालु हो, तुम कृपालु हो, तुम संसार को धारण कर रहे हो।

हे प्रभु! हमें मान और अपमान से ऊर्ध्वा में पहुंचा दीजिए। मान और अपमान से ऊर्ध्व में हमारा जीवन प्रतिष्ठित हो जाए, प्रभु!।

तस्य वाचकः प्रणवः ॥ योग दर्शन १.२७

पदार्थः तस्य - उस (ईश्वर का) वाचक - वाचक (नाम) प्रणव: - प्रणव अर्थात् ॐ कार है।

तज्जपस्तदर्थभावनम् ॥ योग दर्शन १.२८

पदार्थः तत् - उस (ॐ कार का), जपः - जप और तत् - उस (ईश्वर के), अर्थ - अर्थस्वरूप (का), भावनम् - ध्यान करना अर्थात् पुनः पुन: चिन्तन करना चाहिए।

उस ॐ कार का जप और उस ईश्वर के अर्थस्वरूप का ध्यान करना अर्थात् पुनः पुन: चिन्तन करना चाहिए।

तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः ॥ योग दर्शन १.३२

पदार्थः तत् - उन (विक्षेपों को) प्रतिषेधार्थम् - दूर करने के लिए एकतत्त्व - एक तत्त्व का अभ्यास: - अभ्यास (करना चाहिए)।

यः पुनरेतं त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण परं पुरुषमभिध्यायीत स तेजसि सूर्ये सम्पन्नः। यथा पादोदरस्त्वचा विनिर्मुच्यत एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स सामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकं स एतस्माज्जीवनात्परात्परं पुरिशयं पुरुषमीक्षते। तदेतौ श्लोकौ भवतः ॥ प्रश्नोपनिषद २.४१

पदार्थः परमात्मा के सर्वोत्तम नाम को पूर्ण ध्यान से जपता है। (एतेन) इसके द्वारा। (एव) ही। (अक्षरेण) अक्षर अर्थात् नाशरहित। (परम्) महान्, अति सूक्ष्म (पुरुषम्) सारे जगत् में व्यापक परमात्मा को। (अभिध्यातीत) योग द्वारा प्रत्यक्ष करके ध्यान करता है। (स) वह उपासना करने वाला। (तेजसि) ज्ञान के बढ़ाने वाले। (सूर्य) वेद में। (सपन्नः) प्राप्त होकर। (यथा) जैसे। (पादोदरः) सांप जिसके पेट में ही पांव होते हैं। (त्वया) कैंचुली को। (विनिर्मुच्यते) नितान्त त्याग कर देता है। (हवै) इसी प्रकार उपासना करने वाला। (सः) वह। (पाप्मना) मन के भीतर जो मल, विक्षेप और आवरण दोष से। (विनिर्मुक्तः) छूटकर (सः) वह। (सामभिः) सामवेद से बताई हुई उपासना से। (उन्नीयते) बड़ाई को प्राप्त करता है। (ब्रह्म लोके) परमात्मा के दर्शन को प्राप्त करता है। (सः) वह। (एतस्मात्) इस प्रत्यक्ष जगत् से। (जीवधनात्) जीवात्मा देने वाले शरीर से। (परात्) जो कारण रूपी सूक्ष्म प्रकृति है इससे भी। (परम्) सूक्ष्म जो परमात्मा है, जो एक-एक परमाणु के भीतर भी विद्यमान है। (पुरिशयम्) जो जगत् रूप मकान में रहता है अर्थात् जगत् में सर्वत्र व्यापक है। (पुरुषम्) इस कारण से जिसका नाम पुरुष है। (ईक्षते) उसके दर्शन करता हैं। (तद्) उसके विषयों में। (एतौ) ये दो। (श्लोको) श्लोक (भवतः) प्रमाण हैं।

यः पुनरेतं त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण परं पुरुषमभिध्यायीत स तेजसि सूर्ये सम्पन्नः। यथा पादोदरस्त्वचा विनिर्मुच्यत एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स सामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकं स एतस्माज्जीवनात्परात्परं पुरिशयं पुरुषमीक्षते। तदेतौ श्लोकौ भवतः ॥ प्रश्नोपनिषद ५.५

पदार्थः परमात्मा के सर्वोत्तम नाम को पूर्ण ध्यान से जपता है। (एतेन) इसके द्वारा। (एव) ही। (अक्षरेण) अक्षर अर्थात् नाशरहित। (परम्) महान्, अति सूक्ष्म (पुरुषम्) सारे जगत् में व्यापक परमात्मा को। (अभिध्यातीत) योग द्वारा प्रत्यक्ष करके ध्यान करता है। (स) वह उपासना करने वाला। (तेजसि) ज्ञान के बढ़ाने वाले। (सूर्य)

वेद में। (सपन्नः) प्राप्त होकर। (यथा) जैसे। (पादोदरः) सांप जिसके पेट में ही पांव होते हैं। (त्वया) कैंबुली को। (विनिर्मुच्यते) नितान्त त्याग कर देता है। (हवै) इसी प्रकार उपासना करने वाला। (सः) वह। (पाप्मना) मन के भीतर जो मल, विक्षेप और आवरण दोष से। (विनिर्मुक्तः) छूटकर (सः) वह। (सामभिः) सामवेद से बताई हुई उपासना से। (उन्नीयते) बड़ाई को प्राप्त करता है। (ब्रह्मलोके) परमात्मा के दर्शन को प्राप्त करता है। (सः) वह। (एतस्मात्) इस प्रत्यक्ष जगत् से। (जीवधनात्) जीवात्मा देने वाले शरीर से। (परात्) जो कारण रूपी सूक्ष्म प्रकृति है इससे भी। (परम्) सूक्ष्म जो परमात्मा है, जो एक-एक परमाणु के भीतर भी विद्यमान है। (पुरिशयम्) जो जगत् रूप मकान में रहता है अर्थात् जगत् में सर्वत्र व्यापक है। (पुरुषम्) इस कारण से जिसका नाम पुरुष है। (ईक्षते) उसके दर्शन करता हैं। (तद्) उसके विषयों में। (एतौ) ये दो। (श्लोको) श्लोक (भवतः) प्रमाण हैं।

ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं सामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्ते। तमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परं चेति ॥ प्रश्नोपनिषद ५.७

पदार्थः (ऋग्भिः) ऋग्वेद ज्ञानकांड और जाग्रत अवस्था से। (एतम्) इस लोक को। (यजुर्भिः) यजुर्वेद, कर्मकांड और स्वप्न अवस्था से। (अन्तरिक्षम्) चन्द्रादिलोको को (सामभिः) सामवेदी उपासना काण्ड और सुषुप्ति अवस्था से। (यत्) जो मिलता है उसको। (कवयः) ज्ञानी विद्वान्। (वेदयन्ते) जानते हैं। (तम्) उस। (ओंकारेण) परमात्मा के सर्वोत्तम नाम से। (एव) ही। (आयतनेन) आश्रम से। (अन्वेति) प्राप्त करता है। (विद्वान्) विद्वान्। (यत्) जो। (तत्) वह। (शांतम्) इच्छा तथा क्लेश रहित। (अजरम्) अजर। (अमृतं) अमर। (अभयम्) सर्वत्र सदा निर्भय हो। (परम्) अति सूक्ष्म और महान्। (च) और। (इति) यह परिणाम है।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ कठोपनिषद १.२.१५

पदार्थः (यत्) जिस (पदम्) प्रापणीय ब्रह्म का (सर्वे वेदाः) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद, ये सभी चारों वेद (आमनन्ति) बार-बार प्रतिपादन करते हैं (च) और (सर्वाणि, तपांसि) सब सत्यभाषणादि धर्मानुष्ठानरूप तप (यद्) जिसको (वदन्ति) कहते हैं अर्थात् जिसकी प्राप्ति के लिए ही सब तप किए जाते हैं (यम्) जिसकी (इच्छन्तः) प्राप्ति की इच्छा करते हुए (ब्रह्मचर्यम्) ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के नियमों १. पदम्=पदनीयं सर्वोत्तमोपायैर्मनुष्यैः प्रापणीयं मोक्षाख्यमस्ति तत् ॥ (ऋ० भू० महर्षि-दयानन्द) २. "म्ना अभ्यासे" (भ्वा०) धातो रूपमेतत्। "पाघ्रा०" इत्यादिना मनादेशः। ३. "ऋतं तपः सत्यं तपः श्रुतं तपः शान्तं तपो दमस्तपः शमस्तपो दानं तपो यज्ञस्तपो भूर्भुवः सुवर्ब्रह्मैतद् उपास्व, एतत् तपः।" (तैत्ति० आरण्य० प्रपा० १० । अनु० ८) का (चरन्ति) अनुष्ठान करते हैं (तत्, पदम्) उस=पूर्वोक्त गुणविशिष्ट प्रापणीय ब्रह्म को (ते) तेरे लिए (संग्रहेण) संक्षेप से ब्रवीमि मैं यमाचार्य कहता हूं (एतत्) यह (ओम्, इति) 'ओम्' उसका मुख्य नाम है, इस प्रकार सब को जानना चाहिए।